Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर का वैद्य
2·3
(2)

ओ३म्

घर का वैद्य

[प्रथम भाग]

५२०/३

लेखक—

श्री वैद्य बलवन्तसिंह आर्य

प्रकाशक—

हरयाणा साहित्य संस्थान

पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक। (हरयाणा)

श्री कोशलेश्वर पु० शास्त्री
प्रभारी, आर्यसमाज
रोहतक

प्रथम वार ५०० | पौष २०२४ वि० जनवरी १९६८ | मूल्य १.०० एक रुपया

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

❀ ओ३म् ❀
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ ज्वर-प्रकरणम्

विपरीत भोजन तथा विरुद्ध चेष्टाओं के करने से मनुष्य के आमाशय में स्थित वातादि दोष कुपित होकर पेट की अग्नि को उसके स्थान से बाहर निकाल देते हैं। जिससे वह अग्नि शरीर को ऊष्ण कर देती है। जिसे वैद्य ज्वर कहते हैं।

सामान्य लक्षण-पसीना रुकना, शरीर का तापक्रम (उष्णता) का बढ़ना तथा प्रत्येक अङ्ग का जकड़ना ये तीनों लक्षण ज्वर में एक साथ प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

ज्वर सभी रोगों में भयंकर रोग है। इसकी प्रधानता को मानते हुये आयुर्वेद शास्त्र के आचार्य महर्षि चरक ने लिखा है—

देहेन्द्रियमनस्तापी सर्वरोगाग्रजो बली।
ज्वरः प्रधानो रोगाणामुक्तो भगवता पुरा ॥चरक॥

अर्थात्—देह, इन्द्रिय तथा मन को तपानेवाला, सब रोगों में प्रथम तथा प्रधान रोग ज्वर ही होता है। ज्वर के अनेक भेद हैं, तथा चिकित्सा भी उनको दृष्टि में रखकर ही वैद्य को करनी होती है। किन्तु कुछ योग हम यहां पर इस प्रकार के लिख रहे हैं, जोकि सभी ज्वरों पर प्रयोग किये जा सकते हैं, तथा जिनको हमने अपनी चिकित्सा में सहस्रों बार प्रयोग करके अनुभूत पाया है।

वातज्वर में प्रायः रोगी को कब्ज होती है। अतः बिना मल शुद्धि हुये ज्वर दूर नहीं होता। इसलिये कब्जनाशक दो योग यहां लिखे जा रहे हैं—

१—अरण्ड तैल (कास्ट्रायल) ४ तोला १ पाव गर्म दूध में मिलाकर मिश्री डालकर पीवें। इससे कब्ज टूटकर बुखार कम हो जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—फूल बनफशा १ तोला गुलाब फूल १ तोला, छोटा पीपल १ माशा, सौंफ ६ माशा सनाय ३ माशा, मिश्री ३ तोला, पाव जल में घोट छानकर कुछ गर्म करके पिलादें। इससे कब्ज और ज्वर टूट जायेगा।

ज्वरनाशक सरल प्रयोग

१—पुराने आक की जड की छाल ५ तोला लेकर वस्त्र में बांधकर गोदुग्ध में लटका देवें। कपड़ा पात्र में नीचे न लगने पावे। दूध के नीचे आग जलावें। खोवा बनने पर उतार कर जड़ को निकाल छाया में सुखाकर पीस लें, तथा सुरक्षित रखें।

मात्रा—दो से तीन रत्ती गर्म जल से।

यह औषध एक ही मात्रा में ज्वर को उतार देती है, रोगी को पसीना आयेगा और जादू की तरह ज्वर पर प्रभाव होगा।

सर्वज्वर हर यो

२—छोटी पीपल एक तोला, करञ्जबीज (भुने हुये) २ तोला जीरा-सफेद ६ माशा, कीकर को कोमल पत्ती हरी १ तोला इन सबको कूट पीसकर खरल करके चने के समान गोलियां बनालें ज्वर आने से १ घण्टा पूर्व २ गोली जल से सेवन करें, इसी प्रकार दो २ गोली प्रातः मध्याह्न सायं ३-४ दिन तक सेवन करें। फिर ज्वर नहीं आयेगा।

३—गिलोय हरी (नीम पर चढ़ी) १५ तोला, मकोयपत्र ५ तोला, चिरायता ५ तोला, नीम के पत्ते ५ तोला, अतीस ३ तोला, पित्त-पापड़ा ३ तोला, नागर मोथा ३ तोला, कुटकी ३ तोला, इन सबको जौ कूट (मोटी २ कूट) करके ४ सेर पानी में भिगो देवें। प्रातः अग्नि पर रख उबालें। सवा पाव पानी शेष रहने पर छानकर रखें, फिर बीजकरञ्ज १ तोला, असली सत्गिलोय २ तोला, गोदन्ती भस्म १ तोला, काली अभ्रक भस्म २ तोला,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद अभ्रक भस्म २ तोला, रेवन्दसार १ तोला, छोटी इलायची के दाने १ तोला, असली वंशलोचन ८ तोला, फिटकड़ी भस्म (गिलोय से भावित) ढाई तोला, काली मिर्च १। तोला, नागरमोथा १। तोला, कुनेन एक तोला इनको कूटकर कपड़छान कर लेवें। पारा शुद्ध १ तोला, गन्धक शुद्ध १ तोला, मीठा तेलिया १ तोला, पहले पारा गन्धक [illegible] कज्जली बनाकर, मीठा तेलिया मिलाकर चूर्ण में मिला लें। फिर क्वाथ में डालकर खूब रगड़ कर चने बराबर गोली बनाकर रख लें। यह सन्निपात को छोड़ कर सब ज्वरों में विशेष लाभप्रद है। यदि वैद्य ठीक मात्रा में देंगे तो पुराने से पुराना तथा अस्थिगत ज्वर भी समूल नष्ट होगा।

मात्रा—१-१ गोली दिन में तीन बार गर्म जल से।

कासयुक्त जीर्ण ज्वरहर

४–सगे यशद् भस्म १।। तोला, प्रवालभस्म १।। तोला, गोदन्ती भस्म १।। तोला, कपर्दीभस्म (कौड़ीभस्म) १।। तोला, अभ्रकभस्म सफेद १।। तोला, काली अभ्रकभस्म १।। तोला, अकीकभस्म १।। तोला, शंखभस्म १।। तोला, मुक्तासीपभस्म १।। तोला, याकूतभस्म ४।। माशा लें। तथा अजवायन, गिलोय, करञ्जवा, बांसे (अडूसा) के पत्र प्रत्येक ४-४ तोला इनको आठगुणा पानी में डालकर काढा बनावें, चतुर्थांश रहने पर छान लें तथा ऊपरोक्त औषधियों में डाल कर खरल करें। सूखने पर पुनः बकरी दूंध में खरलकर बाद में रुह केवड़ा डालकर २-२ रत्ती की गोली बना लेवें।

मात्रा—प्रातः सायं मध्याह्न में १-१ गोली अर्क गाजवां के साथ में दें। साथ अमृतारिष्ट देने से सोने पर सुहागा का कार्य करेगा। राजयक्ष्मा, जीर्णज्वर और कास पर शतशोनुभूत है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफयुक्त कास ज्वर पर

५–कफ केतुरस १ रत्ती, सितोपलादिचूर्ण १ माशा, प्रवाल–भस्म २ रत्ती सबको मिलाकर दिन में ३ बार शहद से सेवन करें यह एक मात्रा है। इसका सेवन कासज्वर तथा जुकाम में अत्यन्त लाभदायक है।

ज्वरघ्न

६–गोरखमुंडी, सरफूंका, पित्तपापड़ा, चिरायता, सूखी गिलोय खूबकला, अजवायन देशी, कासनी, गुलाबफूल सौंफ, प्रत्येक ५-५ तोला इनको यवकूट (मोटी २ कूट) करके ६ सेर जल में भिगो देवें। २४ घण्टे बाद क्वाथ करें २। सेर जल शेष रहने पर छान लें। इन्हीं औषधियों में दो सेर पानी डालकर पुनः पकावें, १ सेर रहने पर छानकर पहले रखे हुये क्वाथ में मिला लें। अब इस क्वाथ में २ तोला, सफेद फिटकड़ी मिला खूब हिला कर रखदें, बारह घण्टे पड़ा रहने दें, निथरने पर क्वाथ को बोतलों में भरदें। प्रत्येक बोतल में पच्चीस, तीस बूंद गंधक तेजाब दो तोला ठीकरी नोशादर पीसकर मिलादें। अब ये अमृतरूपी ज्वरघ्न तैयार है।

मात्रा– ढाई तोला समान जल मिलाकर ज्वर के रोगी को दें यदि कब्ज हो तो ज्वरघ्न तीन मात्रा "मग्नेशिया साल्ट" तीन तोला, मिलाकर तीन मात्रा बनालें तीन-तीन घण्टे बाद १-१ मात्रा दें। दस्त आकर ज्वर टूट जायेगा शेष भी रहे तो ज्वरघ्न से टूट जायेगा। यह विषमज्वर के लिये एक अनुभूत योग है। प्रत्येक जीर्ण ज्वर में अमूल्य रत्न है। बिगड़े प्रसूतज्वर में राम–बाण है। प्लीहा यकृत बढ जाने में लाभदायक है। उदररोग पेट दर्द में सफल दवा है। रक्तशोधक है। दाद, चम्बल, खाज, फोड़े फुन्सी रक्तविकारों में सफल है। प्रवाहिका (पेचिश) ज्वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ हों अथवा ज्वरातिसार में कभी खाली नहीं जाता।

पिछले दिनों सन् १९५८ में जब हरयाणा प्रान्त में बाढ़ का प्रकोप हुआ, और हजारों गांव जलमग्न हो गये, जिसके कारण सारे प्रान्त में पूर्ण भयंकरता के साथ ज्वर फैल गया तब इस ज्वरघ्न का चमत्कार सब लोगों ने स्पष्ट रूप से देखा। हमने दस-दस मन की मात्रा में बना २ कर प्रत्येक रोगी तक भेजने का यत्न किया। सैंकड़ों लोग इसके बांटने में जुट गये। जिसके पास यह औषध पहुंच गई वह अवश्य ही ज्वरमुक्त हो गया। श्रीमानों को चाहिये कि वे इसे बनवाकर धर्मार्थ बटवायें।

ज्वर का शत्रु

७–धनियां दो तोला, करञ्ज की मींगी (गिरी) तीन तोला, सत-निम्बू छः माशा पीसकर रखें।

मात्रा—दो-दो माशे, दो दो घण्टे में दें। ज्वर उतर जायेगा।

जीर्ण ज्वर

८–अभ्रक भस्म एक रत्ती, छोटा पीपल चूर्ण एक माशा, शहद छः माशा मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है, जीर्ण ज्वर, कास क्षय में लाभदायक है।

मोती ज्वर

आज इस ज्वर से प्रायः सभी लोग परिचित हैं, ग्राम २ में इसके कारण बच्चों तथा युवकों की मृत्यु होती देखी जाती हैं। जो रोगी मौत को प्राप्त नहीं होते उनके भी किसी न किसी ज्ञानेन्द्रिय के ऊपर कुप्रभाव अवश्य पड़ता है। सबसे बड़ी कठिनता यह है कि डाक्टर वर्ग इस रोग की चिकित्सा से नितान्त अनभिज्ञ है। जिस रोगी को डाक्टर नहीं छू पाता वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो शायद बच भी सके, किन्तु जिसकी चिकित्सा डाक्टर महोदय करने लगते हैं, उसके प्राण तो संकट में ही समझो यह एक स्पष्ट सत्य है कि इस रोग की चिकित्सा केवल वैद्यों के पास ही है। आयुर्वेद के अनुसार "मोती झारा" म्यादी ज्वर, सन्तत ज्वर पर्यायवाची शब्द हैं। विषमज्वर का पांचवां भेद सन्तत ज्वर है। यह रोग आंतों की दुर्बलता के कारण पेट में मल रुकने से होता है।

सामान्य निदान-जिस ज्वर में चढते ही अथवा चढ़े हुये ज्वर में कान ठण्डे जिह्वा सफेद किनारी लाल कण्ठ के गढे में रग (नस) का उछलना, छाती, पेट, कुक्षि में मोती जैसे दाने निकलते हैं, उसे ही मोतीज्वर कहते हैं।

ज्वर कम करने के लिये

मृत्युञ्जय रस, प्रवाल पिष्टी, मुक्ता शुक्ति पिष्टी, सत गिलोय, चारों एक-एक तोला, छोटी इलायची के बीज छः माशा, लोबान कोड़िया दो तोला, सबको कूट पीस चार पहर तक नागरमोथे के क्वाथ में खरल करें। गोली ४-४ रत्ती की बनावें।

मात्रा—एक बार १ गोली, तीन बार प्रातः मध्याह्न तथा सायंकाल को दें।

अनुपान—ऋतु अनुसार शर्बत-अनार, अर्क गाजवा. इनमें से एक के साथ देवें। इससे पित्तज्वर, ज्वर की तेजी प्रलाप, घबराहट, बेचैनी, दिल धड़कना. शिरोवेदना, दूर होती है। १०५ डिग्री तक का ज्वर भी आसानी से उतर जाता है। केवल पित्तज्वर में मोटा कपड़ा जल में भिगो, निचोड़कर पेडू पर रखें। १५ मिनट बाद बदल देवें जब ज्वर निन्यानवें (९९) डिग्री पर आजावे तो पट्टी छोड देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर हर

लोवान दो तोला, अभ्रकभस्म दो माशा, शंखभस्म दो माशा, गोदन्तीभस्म दो माशा इन सबको अच्छा तरह मिलाकर रखें।

मात्रा – दो माशा दिन में तीन बार अर्क गाजवाँ अथवा वेदमुश्क के साथ देवें। यह सब प्रकार के ज्वरों को उतार देता है तथा कमजोरी नहीं आने देता।

मृत्युञ्जय रस

शुद्ध शिंगरफ दो तोला, काली मिर्च दो तोला, सुहागा (भुना) एक तोला, शुद्ध विष (वत्सनाभ) एक तोला, पीपल एक तोला, शुद्ध गन्धक एक तोला। निर्माण विधि–वत्सनाभ को तीन चार घण्टे अदरक के स्वरस में खरल करके पश्चात् शिंगरफ डालकर एक घण्टा खरल करें, पीछे सब पिसी औषधियों को मिलाकर एक दिन अदरक के स्वरस में खरल कर उड़द समान गोली बनावें। यह मोतीझारा अथवा म्यादीज्वर में तीन चार घण्टे के अवकाश में खूबकला तीन माशा और मुनक्का बीज रहित पांच दाने पाव-भर जल में क्वाथ कर एक छटांक रख उसके साथ देवें यदि मोतीज्वर में प्यास अधिक हो तो अर्क गाजवां के साथ देवें। रोग के अनुसार १४ घण्टे में जवान रोगी को विचार कर सोलह गोली तक दे सकते हैं।

मात्रा—दो-दो गोली तीन बार दिन में। वात कफादि अनेक ज्वरों में इसका प्रयोग किया जाता है।

कफयुक्त ज्वर में छः माशा शहद, तीन माशा अदरक का स्वरस मिलाकर देवें इसके सेवन से खांसी, जुकाम, नज़ला और कफज्वर के पसीने को दूर करता है। वातज्वर में दही के जल के साथ देवें। सन्निपात में-अदरक जल से अथवा पान के पत्ते के रस से तीन माशा से छः माशा तक, अदरक जल तीन माशा से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवें। अजीर्ण युक्त ज्वर में-निम्बू रस से देवें।

विषम ज्वर (मलेरिया) में काला जीरा और गुड़ के साथ देवें। जीर्ण ज्वर में-जोरे के साथ देवें। सामान्य अनुपान गर्म जल है।

"मोती ज्वर नाशक"

कच्छप (कछुआ) खोपड़ी को पोसकर और बीज रहित मुन्नका समान भाग लेकर कूटलें एक २ रत्ती की गोली बनावें। मात्रा—तीन तीन घण्टे के बाद बच्चे को एक, बड़े को दो गोली देवें।

मोतीझारा

मुक्ता शुक्ति भस्म, गोदन्ती भस्म, केशर, इलायची के दाने प्रवाल भस्म, तुलसीबीज, सुवर्ण माक्षिक भस्म, सत्व गिलोय, ब्राह्मीघन सत्व, प्रत्येक एक २ तोला, गुलाब स्वरस अथवा न मिलने पर अर्क में छत्तीस (३६) घण्टे खरल करके एक एक रत्ती की गोली बनावें।

अनुपानः—तुलसी पत्र स्वरस, मधु समान भाग लेकर देवें। भयंकर मोतीज्वर में, अत्यन्त प्रभावशाली है, प्रलाप, बैचेनी, तृषा (प्यास) दूर करके हृदय को शक्ति देती है। पैत्तिक ज्वर, विषम ज्वर, और क्षय रोग में भी लाभकारी है।

मोतीझारा पर शतशः अनुभूत क्वाथ

(स्वामी दर्शनानन्द गुरुकुल झज्जर)

पित्त पापड़ा चार मासा, नागर मोथा चार मासा, गिलोय चार मासा, मुन्नका सात, उन्नाव पांच दाने, इन सबको आध सेर पानी में पकावें आध पाव पानी रहने पर छान लें। फिर छः मासा मिश्री छः मासा मधु मिलाकर पिलावें। मृत्युञ्जय रस का सेवन रोगी को शहद के साथ कराते रहें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधानी

इस ज्वर की चिकित्सा सावधानी से करनी चाहिये नहीं तो यह बिगड़ जाता है और उसके दुष्परिणाम होते हैं। इसके प्रारम्भ होते ही अन्न बन्द कर देना चाहिये जल को खूब उबाल कर पिलावें। सूर्योदय के पश्चात् उबाला हुआ जल सूर्यास्त से पूर्व ही देना चाहिये, और सूर्यास्त के बाद का उबाला सूर्योदय से पूर्व ही देना चाहिये. इस ज्वर में किसी २ को अतिसार हो जाता है, उसको बन्द करने का यत्न न करें। क्योंकि वह दोष प्राकृतिक दृष्टि से बाहर निकलता रहता है। यदि वह अधिक मात्रा में आने लगे तो रोकने का यत्न करें, इस अवस्था में रोगी को बीजों सहित मुनक्का खिला देवें और दूध न देवें परन्तु दूध को छाछ या निम्बू से फाड़कर, मीठा मिलाकर देवें। इससे दस्त बन्द हो जावेंगे। यदि न हों तो "सिद्धप्राणेश्वर" आदि ज्वरातिसार की औषधि देवें।

पित्त के बुखार पर

सत गिलोय पांच तोला, वंशलोचन एक तोला, छोटी इलायची के दाने छः माशा, सफेद अभ्रक भस्म एक तोला, मुक्ताशुक्ति भस्म १ तोला, शंखभस्म १ तोला, अतीस (कडुआ) ढाई तोला, कल्मीशोरा ढ़ाई तोला, मिश्री कूजा दस तोला, कूटकर मिला रखो।

मात्रा—एक माशा से दो माशा तक दिन में तीन बार जल से लेवें। दो तीन दिन में पित्त-ज्वर दूर हो जावेगा, अनुभूत और अत्यन्त उपयोगी योग है।

विषम ज्वर

१–नवशादर, गोदन्ती, सुहागा, श्वेत फिटकड़ी का फूला प्रत्येक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक २ छटांक, आक के दूध में भिगोकर, सुखा, भस्म की तरह (कपड़मिट्टी करके) फूंक देवें।

मात्रा—तीन दत्ती खांड में मिलाकर दिन में एक ही बार देवें। पसीना आकर एक ही बार से ज्वर उतर जाता है।

२-फिटकड़ी भस्म, नौशादर, करञ्ज बीज गिरी, गेरु, शुद्ध धतूरे के बीज, तुलसीपत्ते, गोदन्तीभस्म आक की जड़ की छाल, सब एक २ तोला, कालीमिर्च छः माशा, नीम पत्ते या घृतकुमारी के रस में खरल करके चने के समान गोली बनावें। ज्वर आने से पूर्व दो गोली जल से देवें। यह अत्युत्तम योग है।

सन्निपात पर अर्कमूलादि क्वाथ

आक जड़छाल, अनन्तमूल, चिरायता, बुरादा देवदारु, रास्ना, संभालु बीज, बच, अरनी की छाल, सोंजना की छाल, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक छाल, सोंठ, अतीस, धांगरा, ये समान लेकर यवकुट करें। दो तोला लेकर आधा सेर जल में क्वाथ करें, आधा पाव रहने पर उतार लें। सन्निपात रोगी को, तीन २ घण्टे बाद पिलावें। यह क्वाथ भयंकर से भयंकर रोगी के उपद्रवों को दूर करता है। प्रलाप, तन्द्रा, बेहोशी जाड़ी खींचना, आंसु गिरना, पसीना अधिक आना, शरीर ठण्डा होना, धनुषवात की तरह होना, श्वास, खांसी, प्रसूता के वातरोगों में अत्यन्त प्रभावशाली है।

प्रलाप में निद्रा लाने के लिये अञ्जन

सरसों का तैल दो कांसी के पात्रों के मध्य में परस्पर रगड़ कर रोगी की आंख में सलाई से अंजन करें। इससे आंखे बन्द हो जावेंगी तथा प्रलाप शांत होगा।

तगरादि क्वाथ

तगर, अश्वगंध, पित्तपापड़ा, शंखपुष्पी, देवदारु बुरादा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटकी, ब्राह्मी, बालछड़, नागरमोथा, अमलतास गुद्दा, हरड़छाल, सब समान लेकर यवकुट करके रखें। पिछले योग की तरह क्वाथ करके दिन में दो बार अथवा ३-४ घण्टे के उपरान्त देवें। सन्निपात ज्वर आदि में रोगी अधिक बकवास करता हो प्रलाप हो ऐसे रोगी पर जादू की तरह असर होता है।

सन्निपात

अभ्रकभस्म एक रत्ती, पीपलचूर्ण एक माशा, अदरक स्वरस तीन माशा में मिलाकर तीन २ घण्टे में देते रहने से सब सन्निपातों में लाभ होता है।

ज्वरघ्नी गुटिका

पारा शुद्ध एक तोला, आंवलासार शुद्धगन्धक चार तोला, एलवा चार तोला, पीपल चार तोला, हरड़ छाल चार तोला, अकरकरा चार तोला, इन्द्रायण का गुद्दा चार तोला, पहले पारा और गन्धक की कज्जली कर, दूसरों को बारीक कूटकर इन्द्रायण (गडुम्बे) के रस में दो दिन खरल करके दो २ रत्ती की गोली बनावें, बहुत उत्तम योग है।

मात्रा–दिन में दो बार दो २ गोली गर्म जल से देवें मलेरिया के बुखार में कब्ज हो तो इससे कब्ज दूर होकर ज्वर दूर हो जाता है।

जयमंगल रस

शुद्ध पारा, शुद्धगंधक आंवलासार, सुहागा भुना, ताम्रभस्म, बंगभस्म, सुवर्ण माक्षिकभस्म, सैंधा नमक, काली मिर्च, कान्त लोहभस्म, रजतभस्म एक २ तोला, स्वर्णभस्म दो तोला पहले पारा और गन्धक की कज्जली बना, अन्य सबको धतूरा पत्ररस, दशमूल क्वाथ, चिरायता क्वाथ की तीन भावना देकर सुखाकर,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधी रत्ती की गोली बनायें।

मात्रा—प्रातः, सायं, मध्याह्न में एक माशा सफेद जीरा के साथ एक रत्ती दवाई खाकर, अर्क गाजवां पीलें। यह खराब से खराब जिसमें शरीर का पञ्जर मात्र शेष रह गया हो, उसके लिये अमृत के समान है, और वात, पित्त, कफ के कष्टसाध्य ज्वरों को दूर करता है। सर्वज्वर विषमज्वर, मेद, मांस, अस्थि, मज्जा तक पहुंचे ज्वर को बाहर निकाल देता है। पित्त में वमन, तृषा दाह हो तो चार तोला धनियां सायंकाल आध सेर पानी में भिगोयें। प्रातः दिन में मिश्री मिलाकर थोड़ा २ पिलावें।

ज्वरारि

यह योग एस्प्रीन आदि के समकक्ष है। लवण सफेद एक तोला को बारीक पोस चूर्ण बनावें, उसको लोहे के तवे पर डाल कर मध्यम आंग से पकावें और उसमें थोड़ा २ सिरका (ईख, जामुन अंगूर चुवाते जायें। सिरका असली हो। आजकल नकली सिरका डिस्टिल्ड वाटर (परिसूत जल) में एस्टिक एसिड डालकर सिरका बना लेते हैं, वह न लेवें, जब एक बोतल सिरका उसमें समाप्त हो जावे तो नमक पर उलटा प्याला रख देवें और उसी पर तीन घण्टे रखा रहने दें। तीन घण्टे बाद स्वाङ्ग शीतल होने पर उतार लें। अग्नि बन्द करदें, लकड़ी से हिलाते रहें। पहला सिरका खत्म होने पर दूसरा डालें। सारा सिरका सूख जायेगा। रखा हुआ प्याला उठाकर शेष में गोदन्ती हरताल भस्म पांच तोला, गेरू एक तोला, खाण्ड दस तोला, सब मिलाकर पीसकर शीशी में रखें। मजबूत कार्क लगावें। बड़ों को चार रत्ती छोटों का अवस्थानुसार। बुखार पर पसीना लाने की जरूरत हो तो गर्म पानी से देकर सुला दें। दस पन्द्रह मिनट में पसीना आयेगा, ज्वर तृषा, दूर हो जायेगी। दर्द, घबराहट, दिल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़कन आदि तो मिनटों में खत्म हो जाते हैं। न्यूमोनिया में जादू जैसा काम करता है। बिच्छू काटने पर इसको खिलाना तथा लेप करना लाभदायक है। नुस्खे मेहनत से तैयार करें और लाभ उठावें।

शीत ज्वर पर

यह योग भी अत्यन्त लाभदायक है। मलेरिया के लिए राम बाण है। परिश्रम से नहीं टलना चाहिये। नौसादर ठीकरी एक तोला, यवक्षार एक तोला, इन्द्रायण स्वरस एक छटांक में खरल करके खुश्क कर लेवें टिकिया बनाकर जौहर उड़ालें। जितना जौहर हो उसके समान उपरोक्त 'ज्वरारि" दवाई मिलालें। योग तैयार है।

मात्रा—दो से चार रत्ती गर्म पानी से देकर सुलादें, पसीना आकर ज्वर उतर जायेगा।

विषम ज्वर पर-मीठी कुनेन

चीनी या खाण्ड दस तोला, अर्क दुग्ध एक तोला, दोनों को खूब खरल करके रखलें जब तक वह सूख जाये तब तक खरल करें। अथवा कुछ गोंद मिलाकर दो दो रत्ती की टिकिया बनालें। अवस्थानुसार, यह चढे हुए को उतार देती है, उतरे को रोक देती है। यह कुनेन से भी बढ़कर है, यदि कब्ज हो तो उसे भी दूर करें इसके प्रयोग में दूध अधिक देवें दूध चावल खिलायें। विषम ज्वर पर लाभदायक है।

विषम ज्वर पर उत्तम योग

गुड़ चार सेर, चिरायता पन्द्रह तोला, कुटकी पांच तोला, गिलोय पांच तोला, अजवायन ५ तोला, मकोय पांच तोला, तुलसी के पत्ते पांच तोला, अफसन्तीन पांच तोला, करञ्जवे के पत्ते न मिलने पर फल लेना चाहिये दस तोला, १८ (अठारह) सेर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी डालकर क्वाथ करें बारह सेर रहने पर उतार गुड़ मिलाकर आसव तैय्यार करें।

मात्रा—चार माशे से सवा तोले तक यकृत, प्लीहा (तिल्ली-बढ़ना) पाण्डु, पुराणे विषम ज्वरों के लिए अमृत रूपी औषध है।

निमोनिया (श्लेष्मक ज्वर)

जिस सन्निपात ज्वर में तीनों दोषों के विकृत होने पर कफ के कारण श्वास लेने में कष्ट हो छाती पार्श्व में अधिक पीड़ा हो खांसी दमकशी हो और कभी २ कफमिश्रित रक्त आवे इत्यादि लक्षण होने पर न्यूमोनिया हो जाता है ऐसा लोक में प्रसिद्ध है।

चिकित्सा-न्यूमोनिया पर काढ़ा

यह योग दर्द छाती के लिए अनुभूत है। न्यूमोनिया की खांसी प्रसूता की खांसी और गले के रोग में, अत्युत्तम है।

गांजवा, नीलोफर, उन्नाव, लिसोढा, मुनक्का, पोस्तदाना, बादाम गिरी, सौंफ, मुलेहटी, अंजीर, खत्मी, बीदाना, सोंठ, बनफसाफूल, प्रत्येक छः २ माशा, तीन पाव पानी में क्वाथ करें, तीन छटांक रहने पर तीन तोला शहद मिलाकर पिलावें। यह एक मात्रा है और प्रत्येक छः २ घण्टे के पश्चात्, इतनी ही मात्रा पिलाते रहें। इससे प्रथम बार में ही रोग में लाभ होना प्रारम्भ हो जायेगा, दो बार अथवा तीन बार देने से पूर्ण लाभ होगा। यदि पुरानी खांसी हो तो, प्रातः सायं नित्यप्रति देते रहें, कुछ दिनों में लाभ हो जायेगा।

पञ्चकोल क्वाथ

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक (चीता) सोंठ, प्रत्येक पांच पांच तोला लेवें। सब यवकुट करके रखें। इसमें से दो तोला लेकर आध सेर जल में क्वाथ करें। आध पाव शेष रहने पर दो तोला मिश्री मिलाकर पिलावें। इस तरह दिन में तीन मात्रा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवें। प्रथम दिन लाभ होता है। दूसरे और तीसरे दिन पूर्ण रूप से रोगी स्वस्थ हो जाता है। यह पूर्ण परीक्षित है, और कई न्यूमोनिया रोगियों पर परीक्षित है, जो कि पैन्सलीन आदि के इंजेक्सन देने पर भी स्वस्थ न हुये उन पर भी इस साधारण से योग का पूर्ण आशातीत लाभ हुआ।

लेप

राई को जल में पीसकर गर्म करके लेप करें, तत्काल दर्द दूर हो जाता है। परन्तु लेप को दस मिनट से अधिक न रखें, क्यों कि यह उपाड़ देता है। यदि उपड़ जावे तो मोम लगाने से ठीक हो जायेगा।

अर्क लेप

आक के पत्तों का स्वरस निकालकर उसमें गेहूं चूर्ण भिगो-कर रवड़ी जैसा वनालें उसे गर्म करके लेप करदें तत्काल दर्द जाता रहेगा। लगा रहने दें।

पार्श्व शूल

उड़द का चूर्ण तीन पाव सेंधा लवण छः माशा राई पन्द्रह माशा, हींग तीन माशा, इन सब को मिला अर्क रस में अच्छी तरह गोंदकर एक रोटी बनावें। फिर एक तरफ से पकावें, और दूसरी तरफ से कच्चा रखें पुनः उतार कच्ची तरफ से तिल तैल से चुपड़कर सुहाता सुहाता सेक करें, और दर्द स्थान पर बांध कर ऊपर से रूई बांधे।

यह औषधि छाती दर्द, पार्श्व दर्द पर अनुभूत है। इससे निश्चित लाभ होता है। अति उत्तम योग है।

अत्यन्त प्रभावकारी योग

शृंग भस्म एक रत्ती शंख भस्म एक रत्ती, भुना सुहागा दो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्ती, अदरक घन सत्व दो रत्ती, यवक्षार दो रत्ती, रस सिन्दूर एक रत्ती, षड़गुण बलिजारित या सिद्ध मकरध्वज एक रत्ती, इन सब को पीस मिला लेवें। यह एक मात्रा है, इसी प्रकार की मात्रा दिन में तीन चार बार देवें। "अनुपान" अदरक स्वरस तीन माशा, शहद छः माशा में मिलाकर देवें।

गुण—न्यूमोनिया की प्रत्येक अवस्था में प्रभावशाली योग है, यदि निमोनिया में दस्त आते हों तो, चार रत्ती काला नमक चार रत्ती जायफल चूर्ण मिलाकर सौंफ अर्क के साथ देवें।

न्युमोनिया की दवा

शुद्ध कुचला पांच तोला, ऐस्प्रीन बढ़िया पांच तोला पीसकर रखें। मात्रा-एक से दो रत्ती उष्ण जल से देवें। यदि कफ ज्वर हो तो उष्ण गोदुग्ध से देवें, और वस्त्र ओढ़कर पसीना लायें, ज्वर उतर जायेगा।

न्यूमोनिया पर (वैद्य रामसिंह मोरखेड़ी द्वारा परीक्षित)

सोड़ावाई कार्ब (मीठा सोडा), लौंग, काली मिर्च समान लेकर कूट छान लेवें। एक सिल्वर की कटोरी में दस तोला जल डालकर उसी जल में उपरोक्त पिसी औषध तीन माशा डालकर अग्नि पर पकावें, उफान आने पर उष्ण २ पिलावें, दिन में तीन बार देवें। और हल्दी को पीस जल में मिलाकर उसमें एक खद्दर का मोटा वस्त्र भिगो चार तह करके रखें, निम्न तह पर हल्दी अधिक हो दर्द के स्थान पर रखकर ऊपर से लोहे का पदार्थ दरांती आदि गर्म करके सेक करें। शीघ्र लाभ हो जायेगा।

न्यूमोनिया पर (वैद्य भरतसिंह आर्य रेलवे रोड रोहतक)

रस सिन्दूर एक रत्ती, शृंग भस्म एक रत्ती, अभ्रक भस्म दो रत्ती, ऐस्प्रीन दो गोली, पीस मिलाकर दो मात्रा बनावें, किसी अनुकूल अनुपान से चार २ घण्टे के पश्चात् सेवन करें। किसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार का छाती का दर्द, पार्श्व शूल, जुकाम, वायु, सन्धिवात में लाभदायक है।

न्यूमोनिया सन्निपात धनुष्वात (वैद्य अखेराम बहु बड़ी रोहतक)

शुद्ध शिंगरफ एक तोला, लौंग एक तोला, सफेद मिर्च एक तोला, शुद्ध संखिया तीन माशा शहद में मिलाकर तीन दिन खरल करें। तीनसौ (३००) गोली बनावें। शीतांग सन्निपात वाले को जब तक न बोले तब तक तीन गोली एक २ घड़ी में देवें। नपुंसकता वाले को ८ गोली सायं प्रातः घी के साथ खिलावें।

न्यूमोनिया लेप

१ तोला कुचला, ६ माशा सोंठ, ६ माशा कुरंग शृंग, पानी के साथ घिसकर थोड़ा गर्म करके पसलियों पर लेप करदें, क्रमशः घिसावें यह निमोनिया बद्धग्रन्थो आदि पर शीघ्र लाभ करता है।

ज्वरों के असाध्य लक्षण

(१) जिस ज्वर के रोगी की जिह्वा काली, नीली, पीली एवं रूक्ष (खरदरी) हो जावे, श्वास की गति, तीव्र और उष्ण हो एवं रोमांच हो, आँखे नीली, पीली या लाल हो जावें, गले में कफ रुकने से खर-खर शब्द हो, ऐसे ज्वररोगी का जीवन प्रायः समाप्त ही जानो।

(२) जिस ज्वर के रोगी को श्वास शीघ्र २ आयें दांत काले पड़ जायें, नेत्र पथरा जायें, शरीर अकड़ जाये ऐसा रोगी शीघ्र मर जाता है।

(३) जिस ज्वर के रोगी के मुख में से रक्त बहे, शिर में तीव्र पीड़ा प्रतीत हो, शरीर के अन्दर दाह मालूम हो तथा बाहर जाड़ा अनुभव हो, ऐसा रोगी भी कठिनता से जी पाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) जो ज्वर का रोगी कभी भी होश में न आये सदा बेहोश पड़ा रहे, वह निश्चित रूप से मर जाता है।

(५) जो ज्वर का रोगी हृदय पीड़ा से व्याकुल हो, रोमांच हो, शरीर में अन्दर शीत लगे और बाहर गर्मी अनुभव हो, उसे मृत्युमुख में गया समझो।

(६) जिस ज्वर के रोगी को वेग से श्वास और हिचकी प्रारम्भ हो जायें, तथा ये किसी भी दवाई से बन्द न हों, आंखे हर समय चञ्चल हों, शरीर दुर्बल हो गया हो, वह भी रोगी मर जाता है।

(७) जिस ज्वर के रोगी की आंखे धूयें से रङ्ग की हो जायें और हर समय बेहोश पड़ा रहे, वह रोगी असाध्य होता है।

(८) जो रोगी अधिक वमन करता हो, तथा वह किसी भी दवाई से बन्द न हो आंखों से पानी बहता रहे, जिह्वा काली पड़ जाये अन्दर दाह हो ऐसा रोगी भी समाप्त हो जाता है।

(९) जिस कफ ज्वर रोगी के शरीर और माथे पर प्रातः प्रातः अधिक पसीना आये वह रोगी भी नहीं बचता।

(१०) जिस ज्वर के पैदा होते ही रोगी की आंख, नाक, कान जिह्वा बेकार (शक्तिहीन) हो जाये उसका जीवन भी पूर्ण समझो।

(११) जिस ज्वर में सभी उपद्रव अथवा सभी विपरीत लक्षण प्रतीत होवें वह रोगी मौत के मुंह में होता है।

(१२) जिस ज्वर के रोगी के शरीर पर शोथ आ जाये उस रोगी को गतायु समझो।

अतिसार प्रकरण

सामान्य निदान—जिस रोग में शौच पतला होकर (जल-मिश्रित) प्रवाह के समान वेग से गुदामार्ग से निकलता है, उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिसार कहते हैं। इसी को लोक में दस्त कहते हैं।

परिचय—अतिसार छः प्रकार का होता है। अतिसार का सम्बन्ध मल (पुरीष) से है इसलिए वैद्य को मल की परीक्षा सर्व प्रथम करनी चाहिये, नहीं तो चिकित्सा में भूल हो सकती है, क्यों कि दस्त कई कारणों से आ सकते हैं। यदि चिकित्सक का यह ज्ञात न हो कि दस्त विशूचिका, अजीर्ण, प्रवाहिका, संग्रहणी, या कृमियों के कारण है वह चिकित्सा में सफल नहीं हो सकता। अतः पूर्व इसका ज्ञान करना अनिवार्य है।

अतिसार व विशूचिका (हैजा) के दस्तों में भेद

१. अतिसार के दस्तों में मल मिला हुआ आता है, और विशूचिका के दस्त नितान्त जल जैसे अथवा चावलों के धोवन के समान होते हैं।

विशूचिका (हैजा) और अजीर्ण के दस्तों में भेद

२ अजीर्ण के जो दस्त आते हैं वह विशूचिका के समान ही होते हैं। क्योंकि विशूचिका भी अजीर्ण से होती है। अजीर्ण के दस्तों से दुर्गन्ध अधिक आती है। विशूचिका में मूत्र बन्द हो जाता है, और अजीर्ण के दस्तों में मूत्र आता रहता है।

कृमि और अतिसार के दस्तों में भेद

३ कृमि रोग के दस्त भी अतिसार के समान ही होते हैं। केवल एक ही भेद है, कृमि के दस्तों में जी मिचलाता है, और अतिसार में 'जी' (मन) नहीं मिचलाता।

अतिसार और संग्रहणी में भेद

अतिसार और संग्रहणी दोनों में ही पतले दस्त आते हैं। परन्तु संग्रहणी के दस्त में भोजन का कुछ थोड़ा सा परिवर्तन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर ज्यों का त्यों दस्त आता है। क्यों कि ग्रहणी दुर्बल हो जाती है, वह पूर्ण रूप से रस नहीं बनाती। ग्रहणी के दस्तों का मल जल में डूब जाता है। अतिसार के मल का डूबना आवश्यक नहीं है।

रक्तातिसार, रक्तार्श, रक्तपित्त के रक्त में भेद

रक्तपित्त में रक्त अधिक मात्रा में बिना किसी कष्ट से आता है। परन्तु अर्श (बवासीर) के रक्त में कष्ट होता है, और कब्ज भी होती है, और रक्तशक्ति लगाने से धार के रूप में आता है। रक्तातिसार में रक्त मलमिश्रित आता है, तथा रक्तपित्त में शुद्ध रक्त ही आता है। इससे यह स्पष्ट होजाता है कि दस्त के साथ रक्त आये तो, रक्तातिसार अथवा पेचिश है। यदि कब्ज के साथ और धार बनकर रक्त जाये तो बवासीर का रक्त है, और बिना कष्ट बिना किसी मिलावट के शौच के मार्ग के रक्त आये तो रक्तपित्त का रक्त है।

चिकित्सक के लिये आवश्यक जानकारी

१–अतिसार पक्व है या अपक्व, आम आता है या पका हुवा मल आता है, इसको जानने के लिये मल को जल में डालकर देखें। यदि वह मल जल में डूब जाये साथ में कटा हुआ भी हो तो वह मल पका हुआ है। इसकी समझकर ही चिकित्सा करें।

२–आमातिसार के प्रारम्भ में दस्त बन्द करने का यत्न न करें अपितु पाचक औषधियों से मल को पकावें। दस्त बन्द करने से अफारा, शूल, विशूचिका, बवासीर, भगन्दर, शोथ, पांडु, प्लीहा, गुल्म, प्रमेह, संग्रहणी आदि उदर रोग होने की सम्भावना होती है।

३–परन्तु अतिसार का रोगी बहुत कमजोर, दुबला, पतला, बलहीन हो गर्भवती स्त्री, वृद्ध या बालक हो और दस्त अधिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ चुके हों, ऐसी अवस्था में शीघ्र ही दस्त बन्द करने चाहियें नहीं तो मृत्यु की सम्भावना रहती है। इसलिये सबसे पूर्व दस्त बन्द करने चाहियें।

४–बलवान् रोगी को अतिसार में उपवास कराना चाहिये इससे आम पक जाता है।

५–यदि एक ही समय में ज्वर और दस्त हों तो उसको आयुर्वेद में ज्वरातिसार कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है। इसमें उपवास नहीं कराना चाहिये।

६–जिस अतिसार के रोगों को पेचिस में अधिक पीड़ा से थोड़ा २ मल आता है उसको बन्द न करें परन्तु कब्ज को दूर करने वाली दवा देवें अरण्ड तैल आदि।

आमातिसार चिकित्सा

यह पहले लिख चुके हैं कि आमातिसार के दस्त बन्द नहीं करने चाहियें, क्योंकि रोग विविध प्रकार के रूप धारण कर लेता है, यह दवा आम को पकाने के लिये है।

क्वाथ

सौंफ, सोंठ, अजवायन, मरोड़फली, काला नमक, राई, नागरमोथा, छोटी हरड़, प्रत्येक डेढ़ २ माशा लेकर सबको यव-कुट करके डेढ पाव जल में क्वाथ करें, डेढ छटांक रहने पर उतार छानकर प्रातः सायं पिलावें। यह एक मात्रा है।

आमातिसार में रक्त आने पर प्रयोग

१. सोंठ, बेलगिरी, कीकर गोंद, सौंफ प्रत्येक पांच २ तोला, भांग ढाई तोला, मिश्री सबके समान, सौंफ को आधी मात्रा लेकर घी में भूनकर चूर्ण बनालें, फिर सबको मिलाकर रखें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा—छः माशा प्रातः सायं ताजा जल के साथ देवें। दो मात्रा में ही आराम हो जायेगा। यह आमातिसार, खूनी पेचिश की अत्युत्तम दवा है। खाने को दही, तक्र, खिचड़ी देवें।

२. सोंठ को अधभुनी करलें पुनः तीन दिन अरण्ड के पत्तों के रस में खरल करें, एक २ माशा की गोली बनालें, फिर सुखाकर रखें, यह दवा आम को पकाने में प्रभावशाली है।

मात्रा—दिन में पांच या छः गोली गर्म जल से देवें।

३. उपले की भस्म एक पाव, सोडावाई कार्ब (मीठा सोडा) एक पाव, पीपर मेन्ट एक तोला, तीनों को खरल करके रखें। आवश्यकता पर व्यवहार करें।

मात्रा—छः माशा से एक तोला तक जल से।

गुण— सामान्य अतिसार तथा आमातिसार में लाभदायक।

अतिसार नाशक

१. एक रत्ती अफीम को एक छटांक बकरी के दूध में मिलाकर पीने से हर प्रकार के दस्त वा पेचिश, रक्तातिसार में लाभ होता है।

कुटजत्वक् पुट पाक

नवीन कूड़ाछाल दस तोला लेकर चावल के धोवन से पीसकर चटनी के समान बना लेवें। इसका गोला बना ऊपर जामुन के पत्ते पर लपेटकर धागा बांध देवें। फिर गेहूँ का आटा रोटी के समान करके लेप कर देवें, और उसके ऊपर गीली दो अंगुल मिट्टी का लेप कर देवें। फिर उसको सुखाकर मन्द अग्नि पर पकावें। जब थोड़ा २ लाल रंग हो जावे तो निकाल शीतल करके ऊपर से सब चीजें हटाकर, जामुन पत्र और छाल को लेकर, निचोड़ स्वरस प्राप्त करें।

मात्रा—छः माशे से दो तोला तक लेकर पीवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब अतिसारों की अद्भुत औषध है, ज्वरातिसार में बहुत अच्छा कार्य करती है। मोतीज्वर के दस्तों में सर्वोत्तम है। यह ज्वरातिसार में "सिद्ध प्राणेश्वर" के साथ देने से जादू का काम करती है।

सस्ता जादू

एक माशा गूलर का दूध पताशे में भरकर खिलाने से पुराने से पुराने दस्त बन्द हो जाते हैं।

रक्तातिसार चिकित्सा

रोगी को कुपथ्य तथा चिकित्सा की भूल से पित्तातिसार में उष्ण पदार्थ सेवन करने और कराने से रक्तातिसार हो जाता है, यदि इसकी ठीक चिकित्सा न की जाये तो भयंकर रूप धारण कर लेता है, अतः इसकी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये।

प्रयोग १. शुद्ध रसौंत, अतीस, कूड़ा छाल, फूल धाय, इन्द्रजौ पठ नीलोध, बराबर लेकर पीसकर रखें।

मात्रा—एक माशा से तीन माशा तक चावल के धोवन के साथ खिलावें।

२. मोचरस दो तोला, अफीम तीन माशा, कपूर देशी छः माशा तीनों को जामुन के पत्तों के रस से तीन चार दिन तक खरल करें, पुनः चने के बराबर गोली बनावें।

मात्रा—दिन में दो २ घण्टे के बाद तीन चार गोली देवें। यह दवा बहुत उत्तम है।

३. जल पीपल को कूट स्वरस निकालें, उसका घनसत्व करके दो दो रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—तीन तीन घण्टे में एक २ गोली गाय या बकरी के दूध से देवें। तीन चार मात्रा से ही लाभ होगा।

४. गाय का नवनीत ढ़ाई तोला, शहद छः माशा मिलाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवन करने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

५. नाग केसर को कूट छान कर तीन माशा लेकर घृत एक तोला सेवन करें। यह एक मात्रा है, इस प्रकार दिन में तीन चार मात्रा लें।

६. जामुन की नम्र छाल को पीसकर शहद में मिलाकर खाने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

७. धान की खील आधी छटांक, खाण्ड एक छटांक, छानकर देने से रक्तातिसार वमन ज्वर, एक ही मात्रा में चले जाते हैं। एक से लाभ न होने पर दूसरी भी दें।

८ गेरू, कत्था श्वेत, राल, गोंद कतीरा, इनको समान लेकर बकरी दूध में खरल करके, एक २ माशे की गोली बनावें।

मात्रा—चावल धोवन से तीन, चार गोली खाने से एक दिन में ही रक्तातिसार जाता रहता है।

९. कीकर की कच्ची हरी फली का स्वरस लेकर सुखाकर चने बराबर गोली बनालें। तीन चार गोली एक बार बकरी के दूध के साथ दें. दिन में दो बार देवें।

१०. चावल के धोवन में मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्तातिसार ठीक हो जाता है।

प्रवाहिका मरोड़ पेचिश

यह रोग अत्यन्त कष्ठ देनेवाला है, जिन दस्तों में बार २ शौच की हाजत हो, जिसमें शौच, गांठ, रक्त एवं पीप कष्ट के साथ आता हो उसे पेचिश कहते हैं। इसमें चिकित्सक को घबरा-कर शीघ्र ही दस्त बन्द न करना चाहिये किन्तु पूर्व साधारण विरेचन देवें। विरेचन के लिए कुछ साधारण योग निम्न हैं।

१. गुद्दा अमलताश ढ़ाई तोला, गर्म जल में भिगोकर, मसलकर छान लें। छः माशा बादाम तैल मिला पिलावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. दो दोला से चार तोले तक अरण्ड तैल (कास्टर आइल) गर्म दूध में मिलाकर पिलावें।

३. इसबगोलभूसी एक तोला, अरण्ड तैल दो तोला डेढ पाव, गर्म दूध में मिलाकर पिलावें।

चिकित्सा

बेलगिरी पांच तोला, गोंद कतीरा पांच तोला, इसबगोल भूसी पांच तोला इनका चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा – तीन तोला दिन में दो बार। अनुपान दही या तक्र के साथ। एक मात्रा से ही लाभ प्रतीत होता है। कई बार पेचिस संक्रामक रोग होता है, विशेषतया उसके लिये योग है। वैसे प्रत्येक पेचिश के लिये मीठा मिलाकर प्रयोग करावें। ऊंटनी दूध का खोवा (मावा) बनायें। मात्रा-दिन में तीन बार एक २ माशा देवें।

सौंफ एक पाव, इन्द्रजौ मीठे पाँच तोला, गोंद कतीरा दस।

निर्माण—सौंफ के चार भाग करें, एक भाग तवे पर भून लें, दूसरे को एक तोला गोघृत में भूनलें, तीसरे को थोडा जल डाल अग्नि पर पकावें, जलके जलते ही उतार लें। चतुर्थ भाग ज्यों का त्यों रखें। इन चारों सौंफ के भागों को मिला लें। अन्य औषधियों को भी कूटकर मिलादें। मात्रा—६ माशा प्रातः सायं भोजनोपरान्त। यह साधारण सा योग विशेष लाभप्रद है। जहां अनेक बहुमूल्य औषधियां विफल हो जाती हैं वहाँ पर भी इससे सफलता मिलती है।

निम्बू का रस एक तोला, अफीम रत्ती देने से पेचिश में शीघ्र लाभ होता है।

अफीम ३ माशा, देशी अजवायन दश तोला, पहले अजवायन को थोड़ा २ गर्म करलें फिर उसमें अफीम डाल दें थोड़ा थोड़ा सा वर्ण परिवर्तन होने पर अर्थात् काला स्याह वर्ण का होने पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतार कर बारीक पीस लें औषध तैयार है ।

मात्रा – एक से दो माशा आयु रोगानुसार जल से देवें दिन में दो बार ।

आक की जड़ की छाल तीन माशा, अफीम एक माशा, दोनों को पीसकर चने के समान गोली बनालें ।

मात्रा—एक २ गोली प्रातः सायं जल से देवें, मरोड़ रक्तातिसार में प्रभावशाली, वमन और विशूचिका में लाभकारी है ।

बड़ा छुहारा (गुठली रहित) एक नग, अफीम दो रत्ती, बेलगिरी छः रत्ती । अफीम की बत्ती बनाकर बेलगिरी के पिसे चूर्ण में लथपथ करलें पुनः छुहारे में भरलें उस पर धागा बांध कर एक छटांक गोंदा हुआ गेहूं का आटा छुआरे पर लगा मन्द अंगारों में दबा देवें, जब चूर्ण पक कर रक्त वर्ण हो जावे तो गेहूँ का चूर्ण तथा धागा हटाकर छुआरे निकाल कर सब का चूर्ण करलें, चने बराबर गोली बनावें, आवश्यकता पर दिन में तीन बार गोली जल के साथ देवें । सब प्रकार के अतिसारों पर सफल प्रयोग है । बालकों पर अनुभूत है ।

"श्री वैद्य अखेराम" बहु बड़ी रोहतक का शतशोनुभूत योग

गो दुग्ध दो सेर, अफीम तीन माशा, गोघृत डेढ छटांक, सर्व प्रथम दूध का मावा बना लेवें और अफीम को दो तोले कच्चे दूध में घोल लेवें और इस मावे में मिला देवें, मावे को घृत में भूनलें भूनने पर आध सेर खाण्ड मिलाकर ढाई तोले के पेड़े बना लें ।

मात्रा—एक एक पेड़ा दिन में तीन बार सेवन करें ।

पथ्य-जांटी के बक्कल (छाल) को कपड़े की पोटली में बांधकर पकते हुए चावलों में लटका देवें । जब चावल पक जायें तो पोटली को निकालकर फेंक देवें और इन चावलों को गोदही के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ खिलावें। यह वैद्य अखेराम जी का अनेकों बार अनुभूत योग है। मैंने भी इसका कई बार प्रयोग किया है. अत्युत्तम है।

पोस्त छिलका, छोटी हरड़, सोंठ, बेलगिरी प्रत्येक ढाई तोला, सोंफ पांच तोला। सौंफ, पोस्त छिलका, और छोटी हरड़ को भिन्न २ घृत में भूनलें, पुनः सबको मिलाकर कूटलें।

मात्रा—डेढ माशा प्रातः सायं जल अथवा तक्र के साथ देवें। पथ्य, दही, तक्र, चावल, मूंग, खिचड़ी तक्र दही से सेवन करें यह अनेकों बार अनुभूत है।

हरी भांग दस तोला, अफीम एक माशा, छुहारे १४ नग, शुद्ध शिंगरफ एक तोला—निर्माण विधि=छुहारे सायंकाल जल में भिगो देवें, प्रातः छुहारे की गुठली निकाल कर, भांग को पीसकर, अफीम और शिंगरफ को मिलाकर छुहारे में भरकर प्रत्येक पर धागा बांध कर ऊपर गेहूं का चून गोंदकर लगावें। दो अंगुल मोटा लेप हो, इसको भूबल में देवें, जब चून पक जावे तो निकाल कर चून और धागे हटाकर सबको खरल करके चने बराबर गोली बनावें।

मात्रा—एक २ गोली दिन में तीन बार देवें। अनुपान—जल में निम्बू का पानी मिलाकर देवें, अथवा अकेले निम्बू रस से।

गुण—रक्तातिसार, मरोड़ अतिसार में ९० (नब्बे) प्रतिशत सफल प्रयोग है।

जदवार (खताई) नो (९) माशा, कपूर देशी तीन माशा, अफीम एक तोला, खांड १६ (सोलह) तोला, इन सब को बारीक पीसकर कम से कम छः घण्टे खरल करके, औषधी निकाल लें।

मात्रा – दो रत्ती से एक माशा तक जल से देवें। अतिसार प्रवाहिका, के लिए उत्तम हैं। इस दवा को विचार करके देवें, क्यों कि रसमें अफीम अधिक है। बालकों को बहुत न्यून देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिफेनासव नं० १

देशी बढ़िया सुरा दस छटांक अथवा रैक्टीफाइड स्प्रिट (अलकोहल) अफीम ढाई तोला, नागर मोथा, इन्द्र जौ, जायफल छोटी इलायची प्रत्येक छः २ माशा, इन सब को कूटकर सुरा में मिलावें। १५ दिन बाद आसव को निथार कर ऊपर से लेवें और शीशी में रखें, और दृढ कार्क लगावें।

मात्रा—पांच से पन्द्रह बिन्दु तक-जल, अर्क सौंफ, अर्क इलायची आदि से दिन में तीन चार बार दें।

गुण—सब प्रकार के अतिसार, रक्तातिसार. प्रवाहिका, संग्रहणी के लिए अमृत तुल्य है। इसे दिन रात में, पचास, साठ (५०-६०) बिन्दु से अधिक कदापि न देवें। यह दवा विशूचिका में लाभदायक है। परन्तु विशूचिका में शरीर शीतल हो गया हो तो यह लाभ नहीं करती। वमन, अतिसार, चाहे किसी कारण से हो पेट दर्द भी हो तो देते ही लाभ होता है। और शुष्क कास के लिए बहुत बढिया दवा है, इसकी बूंदे मलाई में मिलाकर देवें। कोई भी अच्छा वैद्य इससे बहुत लाभ उठा सकता है।

अहिफेनासव नं० २

अफीम एक तोला, निम्बू का रस एक सेर, मिश्री एक सेर। निर्माण—पहले अफीम को थोड़े से निम्बू के रस में घोल लेवें फिर सब को मिला एक चीनी या शीशे के पात्र में एक मास तक मुख बन्द करके रखें फिर निथार कर शीशियों में कार्क लगाकर सुरक्षित रखें। मात्रा—१० से ६० बिन्दु तक अनुपान और समय उपरोक्त नं० १ की तरह।

प्रवाहिका नाशक वटी

कत्था सफेद एक तोला, सुर्मा काला एक तोला, अफीम ३ माशा। निर्माण—इन तीनों को खूब पीसकर थोड़ा जल मिलाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरल करें जब सब अच्छी प्रकार मिल जावें तब चने के समान गोलियां बना छाया में सुखाकर रखें।

मात्रा—एक एक गोली प्रातः मध्याह्न, सायंकाल जल से अथवा किसी अनुपान से देवें।

गुण—प्रवाहिका का रोग कितना भयंकर क्यों न हो, इसके सेवन करते ही रोगी कह देगा मुझे लाभ होगया है। इससे पूर्व अरण्ड तेल देने से निश्चय ही लाभ होगा।

कर्पूर रस-शुद्ध शिंगरफ, नागर मोथा, इन्द्र जौ मीठे, जायफल, कपूर देशी, अफीम प्रत्येक १-१ तोला, भुना हुआ सुहागा एक तोला। निर्माण-कपूर को जल के साथ अच्छी तरह खरल करें जब रबड़ी के समान हो जावे तो अफीम को डालकर खरल करें जब दोनों मिल जावें, तब शिंगरफ डालकर एक घण्टा खरल करें, पश्चात् सब कुटी हुई औषधियों को मिला जल से खरल करके २-२ रत्ती की गोलियाँ बनावें।

मात्रा—युवा पुरुष के लिए एक-एक गोली दिन में तीन बार, तक्र, दही, जल, शर्बत अंजबार देवें। यदि वमन हो तो उष्ण जल से देवें, विशूचिका में अर्क पोदीना या अदरक रस से देवें। यह आयुर्वेद का सहस्रों बार का परीक्षित योग है। प्रत्येक अतिसार, प्रवाहिका, रक्तातिसार के लिए एक ही औषधि है। ज्वरातिसार, संग्रहणी, विशूचिका में प्रभावशाली है, इससे पेट दर्द, वमन, अतिसार शीघ्र से शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

अतिसार नाशक

शीशम के पत्ते छः माशा, पोदीना हरा एक तोला, एक छटांक जल में घोट कर मिश्री मिला दिन में तीन बार देवें।

ज्वरातिसार में (बृहत् गुडुच्यादि क्वाथ)

गिलोय हरी, अतीस, सूखा धनियाँ, सोंठ, बेलगिरी, नागर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोथा, नेत्रबाला, पाढा, चिरायता, इन्द्र जौ मीठा, रक्त चन्दन, खस, पित्तपापड़ा यह सब समान लेकर कूट लें, फिर इसमें से दो तोला लेकर दो पाव जल में क्वाथ करें दो छटांक शेष रहने पर छानलें डेढ़ तोला शहद मिलाकर पिलावें प्रातः सायं दो समय यह ज्वरातिसार की परीक्षित औषधि है।

सिद्ध प्राणेश्वर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, प्रत्येक ४-४ तोला सज्जीक्षार, सुहागा भुना हुआ, यवक्षार, सेंधा नमक, काला नमक विडनमक, साम्भर नमक, सीसा नमक, हरड़ छाल, बहेड़ा छाल, आंवला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, इन्द्र जौ मोठा, सफेद जीरा, काला जीरा, चित्रक छाल, अजवायन, हीग भुनी, वायविडंग, सौंफ, प्रत्येक एक एक तोला।

निर्माण विधि—प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करें पश्चात् सब दवाईयों को कूट छानकर मिलाकर खरल करें एक दिन तक।

मात्रा—चार रत्ती से एक माशा तक पान में रखकर सेवन करायें ऊपर से उष्ण जल पिला देवें दिन में ऐसी तीन मात्रा देवें, अर्थात् अनार स्वरस से देवें। यह शीघ्र लाभ करता है या वृहद् गुडुच्यादि क्वाथ से देवें।

गुण—ज्वरातिसार में लाभ करता है, और ज्वर भी उतार देता है, मोती (म्यादी) ज्वर सन्निपात के ज्वर में देने से अतिसार बन्द हो जाते हैं और ज्वर मन्दा पड़ जाता है। उपद्रव नहीं होने पाते अजीर्ण के दस्त और वमन के लिए भी अच्छा कार्य करता है।

अमृत सञ्जीवनी रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ ६-६ माशा, अभ्रक भस्म ४ तोला। निर्माण—पहले पारा गन्धक की कज्जली करें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् अभ्रक भस्म, वत्सनाभ मिलाकर खूब खरल करें फिर धतूरे के पत्ते का रस और रास्ना के पत्ते का रस डालकर ३ घण्टे तक खरल करें। फिर धायफूल १ तोला, अतीस, नागर मोथा, सौंठ, सफेद जीरा, मुष्कबाला, अजवायन देशी, धनियां, बेलगिरी, पाढ़ा, हरड़ छाल, पीपल चित्रक छाल, कुड़ा छाल, इन्द्र जौ, कत्था, कच्चा अनार, सब १-१ तोला २ सेर जल में क्वाथ करें जब दो पाव शेष रहे छानकर दवा में डाल खरल करें, जब गाढ़ा हो जावे तो एक टिकिया बनावें और एक कोरी हांडी जिसमें जलादि कोई पदार्थ न रखा हो टिकिया को रखकर ऊपर एक मिट्टी का सकोरा उस टिकिया पर उल्टा रखें जिससे टिकिया को ढक ले और छूए भी नहीं और चारों तरफ चून लगा देवें ऊपर बालू रेत भर देवें। नीचे एक घण्टा मन्दी मन्दी अग्नि देवें, यह क्रिया चूल्हे पर करें। उस स्थान पर अग्नि बन्द होने के पीछे जब शीतल हो जावें सब को हटाकर दवा की टिकिया निकाल लें और पीसकर रखें।

मात्रा— दो रत्ती से चार रत्ती तक दिन में चार बार देवें।

अनुपान—अनार मीठा स्वरस अथवा किसी भी अनुपान से वैद्य की सलाह से देवें। गुण—इससे ज्वरातिसार का रोगी मृत्यु के मुख में गया हुआ भी अच्छा हो जाता है।

अतिसार में असाध्य लक्षण

१-जिस अतिसार रोगी का श्वास तीव्र चले, शरीर सूखकर कांटा हो जाये, उसका जीवन अल्प समझना चाहिये।

२-जिस वृद्ध मनुष्य को श्वास, तृषा, शूल और ज्वर की अवस्था में दस्त लग जायें वह भी असाध्य होता है।

३-जिस रोगी के शरीर पर शोथ हो जाये भोजन में अरुचि हो, शूल से बेचैनी हो, वह किसी दवा से अच्छा नहीं हो सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-जिस अतिसार के रोगी के दस्तों का रंग नितान्त, काला, सफेद, पीला या लाल या दुर्गन्धि युक्त हो, मोर के चन्दे के समान चमकदार हो वह भी असाध्य होता है।

*काले रंग के दस्त देखते ही यह न समझें कि इसकी मृत्यु निश्चित है, क्योंकि काले दस्त दूसरे कारणों से भी हो सकते हैं उनके सम्बन्ध में जानना चाहिये कि आँवला, गूगल, लोहभस्म, शाक आदि खाने से तो काला नहीं है, अथवा रोगी से जानकारी कर लेनी चाहिये कि किस भोजन व किस औषध का सेवन किया है।

संग्रहणी प्रकरण

अतिसार के दस्त अच्छे होने पर यदि रोगी कुपथ्य करे तो जठराग्नि मन्द हो जाती है। बिना पचा मल ही बाहर आने लगता है। इसी को वैद्य लोग संग्रहणी या लोक में धरण डिगना कहते हैं। संग्रहणी में कभी पतले तथा कभी गाढे दस्त आते हैं।

मुख पक जाता है कई बार तो कई २ दिन तक दस्त बन्द रहते हैं, पुनः आने प्रारम्भ हो जाते हैं। पेट में गुड़ गुड़ का शब्द होता रहता है। अफारा बना रहता है, दस्तों में से दुर्गन्ध आती है। शरीर का वर्ण पीला होता जाता है। भार भी न्यून होता जाता है। पेट में दर्द होता है, प्लीहा, वात गुल्म हो गया हो ऐसा प्रतीत होने लगता है किसी २ रोगी को छातो में रोग का भ्रम हो जाता है। कभी कभी पित्त के अधिक होने से दर्द और जलन होती है। पेचिश जैसे रक्त मवाद मिश्रित कष्ट से आते हैं।

संग्रहणी हर (१)

संग्रहणी हर-१ पंचामृत पर्पटी एक तोला, नाग केशर १ तोला, सोंठ चूर्ण छः माशा, जीरा भुना ४ मशा, हींग भुनी ४ माशा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सब को मिलावें इसकी ५ रत्ती की मात्रा बनालें, अनुपान मधु से दिनमें ३ बार देवें अथवा रोग के अनुसार ३-३ घण्टे में देवें। यह योग संग्रहणी में राम बाण जैसा कार्य करता है, पित्तातिसार में सौंठ और हींग न मिलावें।

२–वंश लोचन ५ तोला, चन्दन सफेद ५ तोला, आंवला सूखा १० तोला, धनियां सूखा १० तोला कुडा छाल १० तोला, शुद्ध रस कपूर २॥ तोला, खांड २॥ तोला, इनको कूट छान कर रखें।

मात्रा—एक तोला दिन में दो–तीन बार देवें। दही तक्र का सेवन करें। इस योग की बड़े २ मद्रास के चिकित्सालय और यूनानी विद्यालय परीक्षा कर चुके हैं।

३–शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोध्र, नागर मोथा, इन्द्र जौ मीठे, फूल धाय, मोचरस, बेलगिरी, काली मिर्च प्रत्येक १-१ तोला, शंख भस्म २ तोला, कौड़ी भस्म २ तोला, अफीम ३ तोला। निर्माण—पहले पारा गन्धक की कज्जली बनावें, दूसरी सब दवाओं को अफीम के अतिरिक्त कूट छानकर कज्जली में मिलाकर खरल करें, अफीम को थोड़े से जल में भिगोकर रखें, जब सारी अफीम पिघलकर जल में मिल जावे, तो इस जल को उसी दवा में डालकर खरल करें, जब गोली बनाने जैसी हो जावे तो २-२ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—२-२ गोली प्रातः सायं गोतक्र या गोदही से ही दें खाने को गोतक्र दिया जावे तो अच्छा है नहीं तो मूंग चावल की खिचड़ी गोदही से देवें अथवा लवणयुक्त चावल बनाकर गोतक्र या गोदही से दें। यह दवा जब पतले दस्त हों अधिक मात्रा में आरहे हों उस समय अमृत जैसा काम करती है. यह बहुत प्रयोग करके सफलता प्राप्त की है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-इन्द्र जौ ५ तोला, कद्दू के बीज, मस्तगी रूमी। वंश लोचन, सौंफ, भूनकर प्रत्येक एक एक तोला, भांग सूखी दो तोला, फूल घाय दो तोला, समाक छाल छः माशा, अफीम ३ माशा. शुद्ध कुचला छः माशा, उत्तम लोह भस्म एक तोला, सबको बारीक पीसकर चूर्ण बनावें।

मात्रा—एक माशा प्रातः सायं दही तक्र से देवें। यह दवा संग्रहणी के लिए बहुत बढ़ चढ़ कर कार्य करती है, अनेक रोगियों पर परीक्षा की जा चुकी है, निराशा में आशा की झलक दिखाती है। पथ्य उपरोक्त ही है।

५-कुड़ा छाल १० तोला और उसको कूट छानकर प्रातः छः माशा दही तक्र से सेवन करें और तक्र दही ही पीते रहें जितना पी सकें १ दिन में ही संग्रहणी से छुट्टी मिल जायेगी नहीं तो सारी दवा सेवन करें यह दवा प्रवाहिका रोग में भी अमृत का काम करती है। जो पेचिश किसी दवा से ठीक न होती हो, इसके सेवन से निश्चय ही लाभ होता है। पथ्य—सेवन विधि संग्रहणी वाली ही है।

६-इस कुड़ा छाल की ५-५ माशा को मात्रा गरम गोघृत से देवें। पथ्य—बेशन की रोटी गोघृत खिलायें जो गठिया (सन्धि-वात) का रोगी हिल जुल नहीं सकता दर्द बहुत अधिक होता है। इसकी कुछ मात्राओं से ही लाभ हो जाता है, जादू जैसा कार्य करती है, इसको बनाकर देने से रोगी प्रसन्न हो उठता है—यह कडवी है।

दुग्ध वटी

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा तेलिया, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, शुद्ध वर्किया हड़ताल, शुद्ध शिंगरफ, मोच रस, अफीम, सब समान लेवें। निर्माण—पारा गन्धक की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कज्जली बनालें, फिर शुद्ध मोठा तेलिया का चूर्ण बनाकर ३-४ घण्टे गाय के दूध में खरल करें, एक दूसरी खरल में हड़ताल को गोदूध से इतना खरल करें जिससे इसकी चमक न रहे। इसमें शिंगरफ को मिलाकर १॥ घण्टे खूब जोरदार हाथों से रगड़ें इसके पश्चात् अफीम को मिलाकर रगड़ें, मोचरस को पीस छानकर साथ में भस्मों और मोठा तेलिया सब एकत्र करके एक दिन गो दूध में खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बनावें। सेवन विधि -एक गोली दिन में तीनवार गोदूध से देवें। इस औषधि के सेवन काल में केवल गोदुग्ध मात्र ही देवें। पहले दिन रोगी को आध सेर दूध देवें, प्रतिदिन २ छटांक दूध बढ़ाते रहें। इसी प्रकार दूध बढाते बढाते १५-२० सेर ले जावें रोगी इस दूध को सरलता से पचा सकता है, इस रोगी को जल अथवा लवण भूलकर भी न दिया जावे यदि जल देने की आवश्यकता पड़े तो नारियल का जल देवें।

संग्रहणी पर परीक्षित योग

कुड़ा छाल ५ सेर, सौंठ, मोचरस, इन्द्र जौ, अजवायन, गोखरू, पुराना गुड़, प्रत्येक दो-दो तोला। निर्माण-कुड़ा छाल को बारीक पीसकर तीन दिन चार गुणे जल में भिगो देवें, तीन दिन के पश्चात् क्वाथ करें, जब ५ सेर जल शेष रहे छानकर जल को कढाई में डालकर अग्नि जला देवें जब तीन सेर जल शेष रह जावे तब अन्य औषधियों को पीसकर मिला देवें और मन्दी २ अग्नि जलाते रहें तथा पल्टे से हिलाते रहें। गोलियां बनाने योग्य होने पर उतार जंगली बेर के समान गोलियां बनालें।

मात्रा—दो-दो गोली प्रातः सायम्।

अनुपान—तक्र देवें, जब लाभ हो जाये तब अन्न देना प्रारम्भ करें। पूर्ण लाभ होने तक साथ में द्राक्षासव देते रहें। लाभ होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पश्चात् १ सप्ताह तक औषधि देते रहें और द्राक्षासव ५-६ सप्ताह तक पिलाते रहें, तक्र का सेवन साथ रहे बिगड़ी हुई संग्रहणी में दिन में ३ बार ६ गोली देवें।

अर्श (बवासीर)

बवासीर में रोगी को कब्ज होती है, गुदा पर मस्से होते हैं, शौच के समय पीड़ा होती है, गुदा पर भार प्रतीत होता है, शौच जैसी अवस्था रहती है, गुदा पर खुजली होती है, पाचनशक्ति जाती रहती है, शरीर का वर्ण, श्वेत, पीला, काला होजाता है। ये न्यूनाधिक लक्षण मिलते हैं। रक्तार्श में शौच तथा रक्त थोड़ा २ कष्ट से आता है। रक्त का परिमाण भिन्न है, किसी रोगी को कुछ बिन्दु रक्त के किसी को दो अथवा चार तोला और किसी को १ पाव से १ सेर पर्यन्त रक्त आता है। जब यह रोग पुराना होजाता है तो, सामान्य बैठते, मूत्र करते समय भी रक्त आने लगता है।

(१) रक्तार्श पर, रीठाफल की छाल १ तोला, पीसकर १ माशा मलाई में देवें लाभ होगा।

(२) मक्की की कुकड़ी (भुट्टा) जिसके दाने निकाल लिये हों, उसको भस्म करें और वस्त्र से छान लें। मात्रा-२ माशा जलसे नित्यप्रति खाते रहने से बवासीर के रक्त को रोकता है और रक्तप्रदर पर भी अच्छा कार्य करता है, कई रोगियों पर अनुभूत है।

(३) १ माशा कलमी शोरा पीसकर ३ माशा बकरी के दूध से प्रातः सेवन करें, बकरी के दूध में मीठा मिलालें, इससे पुरानी बवासीर रक्तार्श, बादी, दोनों ही को लाभ हो जाता है।

(वैद्य दयानन्द ग्राम निडाना, जि० जीन्द)

(४) बनगोषी की भूज्जी (शुष्क शाक) गोघृत में पकावें, इसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें काली मिर्च, काला नमक, हल्दी डाल देवें पश्चात् पकावें। जब यह पककर तैयार हो जावे तो बैसनी रोटी के साथ सेवन करें, और १ घण्टे तक जल न पीवें। यह शाक दोनों समय बनायें, प्रत्येक समय में १०-१० तोला घी हो। गोदूध धारोष्ण पीवें, अथवा ऊष्ण करके शीतल करलें केवल दूध हो पानी नहीं। २१ दिन तक सेवन करें, इसके अतिरिक्त कुछ भी न खावें, यह औषध बवासीर और भगन्दर पर परीक्षित है। भगन्दर रोग पर बान्धने वाली औषधि साथ चलायें। जो भगन्दर रोग प्रकरण में लिखी है वह भी वैद्य दयानन्द की परीक्षित है, यह दोनों खाने और बान्धने की एक साथ करें।

(५) रक्तार्श अथवा बादी दोनों पर—कलोंजी, सलजम [सलगम] के बीज, गाजर के बीज, मूली के बीज प्रत्येक एक एक तोला इन सब को मोटी मूली में गड्ढा खोदकर बीज भर देवें, मूली के मुख को आटे से बन्द कर देवें और १५ सेर उपलों की अग्नि में भस्म कर देवें, इसको कुमारी स्वरस में खरल करके चने के समान गोलियां बनावें।

मात्रा—२-२ गोलियां प्रातः सायं जल से देवें, १ सप्ताह में बवासीर दूर होगा।

(६) रक्तार्श रीठे की गिरी निकाल देवें और छाल ले लेवें छाल को लोहे की कढाई में डालकर काले रंग की भस्म बनालें इसी के समान पपडिया कत्था मिला पीस कपड़ छान करलें।

मात्रा—१ रत्ती मलाई में प्रातः सायं सेवन करें, ७ दिन में लाभ हो जाता है। इस दवा के सेवनकाल में लवण खटाई वर्जित है।

गुण—बवासीर की खुजली, कब्ज, रक्त का आना शीघ्र लाभ होता है। विशेष—इस दवाई का प्रभाव छः मास तक रहता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। यदि इसका दो-तीन बार छः छः महीने पश्चात् सेवन किया जावे। प्रत्येक बार ७ दिन सेवन करें तो लाभ बना ही रहता है।

(७) ककरोन्दा [गन्धीली] का स्वरस २ तोला, गोघृत १ तोला मिलाकर पीवें इससे रक्तातिसार निश्चित चला जाता है, प्रत्येक मार्ग से रक्त आने को बन्द करता है।

(८) ककरोन्दा का स्वरस ४ सेर में काली मिर्च का चूर्ण दो तोला मिलाकर घन सत्व करके जंगली बेर के समान गोली बनालें, १ १ गोली जल से प्रातः सायं सेवन करें दोनों प्रकार का अर्श दूर हो जाता है और शरीर के किसी अंग से रक्त जाता हो किसी कारण से निश्चित, बन्द हो जाता है।

(९) अर्श के मस्से गिराना–सुखदर्शन के पत्तों की लुगदी बनाकर इसकी टिकिया बना लें, फिटकड़ी भुनी हुई २ माशा सांग १ माशा इन दोनों को बारीक पीसकर टिकिया पर डालकर बवासीर के मस्से पर मलकर लंगोट बांध रखें। इसी प्रकार ७ दिन करने पर मस्से गिर जाते हैं और पुनः नहीं होते।

(१०) रक्तरोधक—फिटकड़ी ढाई रत्ती, हीरा कसीस ढाई रत्ती, नीला थोथा जला हुआ आधी रत्ती, गुलाब अर्क ३।। तोला में मिलाकर बहते हुए बवासीर के रक्त पर बांध देवें उसी समय रक्त बन्द हो जाता है। ध्यान रहे बवासीर के मस्से भीतर न जाने पावें यदि भीतर जाने का डर हो तो धागे से बाँध देवें।

(११) लेप–संखिया एक चावल अफीम २ चावल जलाया हुआ नीला थोथा एक चावल, मिलाकर शीशे के पात्र पर रगड़ कर थोड़ा सा जल मिलाकर मस्से पर लगा देवें १-१ घण्टे में लेप बदलते रहें। यह औषधि मस्से से अन्य स्थान पर न लगे इससे घाव हो जायेगा। ५-६ दिन में मस्से गिर जाते हैं। इसमें भी मस्से भीतर न जाने देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१२) पुल्टिस—मूली बीज एक छटाँक, सन बीज एक छटांक, पीली सरसों एक छटांक, तिल की खल एक छटांक, इन को कूट छान लें। आवश्यकता पर थोड़ी सी औषधि लेकर गोतक्र मिलाकर तिल का तैल आवश्यकतानुसार मिला पुल्टिस बनाकर बांध देवें। इसी प्रकार करने से ५-६ दिन में मस्से गिर जावेंगे।

(१३) नीम की निम्बोली की गिरी, बकायन के फल की गिरी, चाकसू, शुद्ध रसौंत काबली हरड़ का छिलका प्रत्येक १-१ छटांक, गेंदे के फूलों का स्वरस ५ छटांक।

निर्माण—इन सब औषधियों को कूट छान लें फिर खरल में डालकर पीसें इसकी जंगली बेर के समान गोलियां बनावें।

मात्रा—एक गोली प्रातः बासी जल से एक गोली सायं जल से दें।

गुण-इन गोलियों से रक्त आना प्रथम दिन ही बन्द हो जाता है। दाह (जलन) टीस में लाभ होता है तथा एक सप्ताह में पूर्ण लाभ हो जाता है। यदि ४० दिन सेवन की जाये तो पुनः होने का डर नहीं रहता। इसके सेवनकाल में दही घृत का प्रयोग अधिक मात्रा में करें। लाल मिर्च, करेला, बैंगन, अचारादि उष्ण पदार्थों का सेवन न करें, तैल गुड़ का सेवन भी छोड़ दें। यह दवा संजीवनी बूटी का गुण रखती है। साधु महात्मा इसे धर्मार्थ देते रहे हैं। दोनों प्रकार की बवासीर अच्छी होती है।

(१४) कपूर, रसौंत, बिनोले की गिरी, इन तीनों को १-१ माशा लेकर जलमें घोटकर मस्सों पर लगाने से १-२ बार में कितना ही दर्द हो लाभ हो जाता है।

(१५) श्वेत संखिया, शैलखड़ी, रसकपूर प्रत्येक ६-६ माशा अकरकरा १॥ माशा, नील १॥ माशा, श्वेत फटकड़ी भुनी हुई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ माशा इन सबको बारीक पीसकर सुरक्षित रखें आवश्यकता पर एक लोहे की शलाका जल में भिगोकर मस्से पर और उसकी जड़के चारों ओर लगावें, एक दिन छोड़कर फिर लगावें ७ दिन में मस्से कट जायेंगे।

पुल्टिस—यदि इस औषधि के लगाने से दर्द अधिक हो तो गेहूँ का मेदा और अलसी को कूट कर घृत में पकाकर मस्सों पर बान्ध देवें। शीघ्र गलकर गिर जावेंगे।

(१६) मरहम—जब मस्सा कट जाता है तो घाव हो जाता है। तब यह मरहम लगानी चाहिये—सफेदा क सगिरी १ तोला, कत्था एक तोला, मुर्दासग छः माशा, कपूर तीन माशा, सिन्दूर छः माशा, कमीला १ तोला १०० बार धोया हुआ नवनीत (घृत) २॥ तोला इन सबको पीस घृत में मिलाकर लगावें और खाने को कोई एक दवा भी देते रहें। यह मरहम मस्सा कटने पर हुए घाव पर लगानी चाहिये।

(१७) रक्तार्श—रसौंत एक माशा, काला सुर्मा ३ रत्ती इन दोनों को पीस गोघृत में मिलाकर देवें, यह एक मात्रा है। इसी प्रकार कुछ दिन सेवन करते रहें।

(१८) अरण्य उपलों को जलाकर भस्म बनावें पश्चात् क्षार विधि से जल में भिगोकर निथार कर जल को कढाई में डाल नीचे अग्नि जला कर जल शुष्क करें और नीचे लगे हुए क्षार को खुर्च कर प्रयोग करें-मात्रा १ से ४ रत्ती आयु और रोग के अनुसार देवें। अनुपान जल। गुण—सब प्रकार की बवासीर की अत्युत्तम दवा है। इस दवा का यह गुण है। बवासीर के कारण जो उपद्रव हो गये हैं जादू बनकर लाभ करती है। इस योग के बनानेवाले का कहना है, यह मेरा परीक्षित योग है जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस वर्ष से मैं अपने चिकित्सालय में प्रयोग कर रहा हूँ और पुरानी से पुरानी बवासीर इससे अच्छी हो गई है। नित्य रहने वाली कब्ज के लिये भी परीक्षित है। बवासीर बादी तथा कुल परम्परा से होने वाली बवासीर पर शत वर्षों का परीक्षित योग है।

(१६) ककरोन्दा (गन्धीली) के पत्ते २ भाग, काली मिर्च १ भाग, शुद्ध गूग्गल १ भाग, पीसकर ककरोन्दा स्वरस अथवा घृतकुमारी स्वरस से खरल करके जंगली बेर के समान गोलियां बनावें।

मात्रा—१ गोली नित्य जल से सेवन करावें।

यह बादी बवासीर के लिये अमृत है। बवासीर की बुरी अवस्था में पहुँचने पर भी इससे अच्छे हो गये हैं। ९९ प्रतिशत सफल प्रयोग हैं अपने अनुभव से प्रतीत हुआ यह सब प्रकार के बवासीर पर अच्छा कार्य करती है, रक्तातिसार पर देने से दो तीन दिन में रक्त बन्द करती है।

(२०) लेप मस्से पर—सज्जी ६ माशा अनबुझा चूना १० तोला, हड़ताल वर्किया १ एक तोला, सफेद संखिया ३ माशा इन सबको बारीक पीसकर दो दिन घृतकुमारी स्वरस में खरल कर गोली बनावें।

प्रयोग—मुख के थूक में घिसकर मस्सों पर लगावें ३-४ दिन में मस्से गिर जाते हैं।

असाध्य लक्षण

सहजानि त्रिदोषाणि यानि चाभ्यन्तरां बलिम्।
जायन्तेऽर्शांसि संश्रित्य तान्यसाध्यानि निर्दिशेत्॥

(१) जिस बवासीर के रोगी के मस्तक पर हृष सम्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता रहे, भोजन में अरुचि और कब्ज कठिन हो, पेट में दर्द हो ऐसा अर्श रोगी मृत्यु को प्राप्त होता है

(२) अर्श रोगीको अतितृषा भोजन में अरुचि, रक्त बहुत आवे, अतिसार हो जावे शरीर पर शोथ आजावे ऐसा रोगी भी असाध्य है।

(३) अर्श रोगी के हाथ पैर गुदा अण्डकोषों पर शोथ हो तथा पार्श्वशूल हो वह भी अच्छा नहीं होता।

(४) जिस अर्श के रोगी का हृदय बेचैन रहता हो, बुद्धि कार्य न करे, अङ्ग प्रत्यङ्ग शक्तिहीन हों, ज्वर रहता हो, तृषा से दुःखी हो गुदा पक जाय, ऐसा रोगी असाध्य है।

अजीर्ण प्रकरण

अजीर्ण रोग ६ प्रकार का होता है—

अजीर्ण का कारण—जो मनुष्य अन्धाधुन्ध भोजन पर भोजन करते रहें, जिह्वा के पिट्ठू पशु की तरह खाते ही रहें उनको अजीर्ण (बदहजी) होता है।

चिकित्सा मन्दाग्नि, अजीर्ण (बदहजमी)

१- स्वादिष्ट चूर्ण—श्वेत जीरा भूनकर ६ तोला, काली मिर्च ८ तोला, सैन्धव लवण १ तोला, सत् निम्बू २ तोला, मिश्री ५ तोला, इन सबका चूर्ण बनावें।

मात्रा—३ माशा प्रातः सायम्।

गुण—अरुचि, मन्दाग्नि, जी मिचलाना, खट्टी डकारों का आना आदि रोगों में लाभकायक है।

2- अमृत चूर्ण—सत पोदीना ३ माशा, सत अजवायन ३ माशा, नोशादर ठीकरी ३ तोला, काला लवण ३ तोला, गेरु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
६ माशा, इन सब को पीस कर रखें, यह शीशी में रखें।

मात्रा—४ रती से एक माशा, बालकों को थोड़ी मात्रा में देवें। अनुपान –अर्क (पोदीना, इलायची, सौंफ) उष्ण जलादि से देवें।

गुण—अजीर्ण, मन्दाग्नि, अफारा, पेट दर्द, विशूचिका, भिड़, ततीया, कान दर्द, दांत दर्द, आदि रोगों में लाभ करता है। अमृतधारा के समान गुण हैं।

३- मन्दाग्नि पर, अजवायन देशी १५ तोला, सैन्धव लवण, संचर लवण, साम्भर लवण, प्रत्येक १-१ तोला इन सब औषधियों को निम्बू और अदरक स्वरस में एक मास पर्यन्त पड़ा रहने देवें जब शुष्क हो जावें छानकर रखें, इस की ३ माशा की मात्रा में १ रत्ती अरण्ड खरबूजा (पपीता) का सत् अथवा पेपीन (अंग्रेजी दवा) जो पपीता का सत् है, मिलाकर खिलाने से भयंकर मन्दाग्नि भी दूर होती है।

विशेष ज्ञातव्य—पेपीना बहुत मूल्यवान है अंग्रेजी दवा है। अतः पपीता का सत् निकाल लें।

विधि—वृक्ष पर लगा हुवा कच्चा पपीता जो पका नहीं, उस फल में किसी कलीदार शस्त्र से लकड़ी, पत्थर, चीनी के पात्र में दूध लेवे। पश्चात् उस दूध को बालुका यन्त्र से शुष्क करलें, यही पपीते का सत् है। यही अंग्रेजी दवा जो बहुमूल्य में देते हैं। इसकी मात्रा १ रत्ती है। बालुका यन्त्र की विधि–किसी पात्र में बालु रेत भरकर उसके ऊपर दूधवाला पात्र रख देवें और नीचे मन्द मन्द अग्नि जलावें, इससे दूध सूख जावेगा। सावधानी से लेलें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) विशेषवटी-शुद्ध गन्धक ५ तोला, चूना अनबुझा ५ तोला, सोडा खाने का ५ तोला। निर्माण—प्रथम गन्धक और चूना को एक पात्र में डालकर पकावें, मन्दाग्नि होनी चाहिये और इसके धूवें से बचते रहें। जोश आने पर उतार कर शीतल करलें फिर सोडा मिलाकर खरल करें। जब एक जीव हो जावें तो इसमें इतना निसास्ता मिलावें जितने से गोली बन सकें. गोली ढाई ढाई रत्ती की बनावें।

मात्रा– एक २ गोली दिन में तीन बार देवें, बालक को न्यून देवें। गुण–उदर रोग, अजीर्ण वमन, अतिसार विशूचिका, प्रत्येक प्रकार का ज्वर खांसी निमोनियां, रक्त दोष, त्वचा के रोग आदि रोगों को दूर करता है।

(५) पाचकवटी-हरड़ छाल दो तोला, अजवायन देशी दो तोला, सौंठ दो तोला, दालचीनी दो तोला, सौंफ दो तोला, जीरा सफेद एक तोला, पपीता (अरण्ड खरबूजा) का कच्चा फल सूखा ३ तोला, पांचों लवण ४-४ तोला मीठा सोडा खाने वाला ४ तोला, हींग बढिया ६ माशा, इन सबको कूटकर चूर्ण बनावें और ५ तोला निसास्ता गेहूँ असली को अर्क सौंफ में घोलकर रबडी सी बनाकर चूर्ण को डाल खरल करके गोलियां बनावें, गोली चने के समान हो। सुखाकर शीशी में रखें। विशेषज्ञातव्य–पपीता चीरकर कच्चा धूप में सूखा कर प्रयोग में मिलायें।

मात्रा—बालकों को एक एक गोली, बड़े पुरुषों को ४-४ गोली। अनुपान–जल अथवा कोई अच्छा अनुपान हो। दिन में तीन बार सेवन करें। गुण–अत्यन्त पाचक है, उदर रोगों में अतीव लाभप्रद है ९९ प्रतिशत सफल प्रयोग है। पेट की अम्लता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तेजावीयत) आंतों के रोग ठीक करके पाचन शक्ति को ठीक कर देती हैं। भोजन को पचाकर रस बना देती है वमन मतली दस्त आदि पर शीघ्र प्रभाव दिखाती है बेचैनी और पेट दर्द को शीघ्र दूर कर देती है, यह गोलियां रोते को हंसाती हैं, अत्युत्तम योग है, प्रत्येक चिकित्सालय में रखने योग्य है।

(६) पीपरमेन्ट एक माशा, शुद्ध हीरा हींग एक तोला, यवक्षार असली ढाई तोला सतनिम्बू ढाई तोला, मीठा सोडा ढाई तोला, काला जीरा २॥ तोला, कल्मीशोरा १० तोला, काला लवण १० तोला सैन्धव लवण २० तोला, काली मिर्च २० तोला इन सबको कूट छानकर पांच तोला असली सिरका छाया में शुष्क कर लें।

मात्रा—३-४ माशा प्रातः सायम्।

गुण—क्षधावृद्धि मन्दाग्नि वायुगुल्म डकारों का आना यकृत, प्लीहा, अफारा, बवासीर, मूत्रजलन अजीर्ण पेट के समस्त रोगों पर लाभकारी है।

(७) स्वादिष्ट चूर्ण—जीरा १० तोला, सिरका दस तोला, गन्धक तेजाब ३ माशा, काला लवण २ तोला, इन सबको एक बोतल में डालकर ३ दिन रखें, फिर निकाल छाया में शुष्क करें इसको चीनी अथवा शीशे के पात्र में शुष्क करें, मन्दाग्नि आदि रोगों पर लाभ करता है।

(८) भस्मक रोग—इस रोग में सब खाया पीया भस्म हो जाता है, क्षुधा अधिक लगती है, इसमें अपामार्ग (ओंगा) के बीजों का चूर्ण करके एक तोला खाने से लाभ हो जाता है।

(९) लवण भास्कर चूर्ण—साम्भर लवण ८ तोला, संचर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लवण ५ तोला, विड़ लवण, सैन्धा लवण, धनियां, पोपल, पीपला-मूल, काला जीरा, तेज पात, नाग केशर, तालीस पत्र अम्ल वेत प्रत्येक २-२ तोला, काली मिर्च, सफेद जीरा, सौंठ प्रत्येक एक २ तोला, अनार दाना ४ तोला, दाल चीनी, इलायची छोटी प्रत्येक छः छः माशा इनको कूटकर चूर्ण बनालें, यदि निम्बू स्वरस की ७ भावनायें दे ली जायें तो बहुत उत्तम हो. यह चूर्ण जनता के लाभार्थ भास्कर ऋषि ने बनाया था।

गुण—यह आयुर्वेद का स्वादिष्ट चूर्ण पेट के रोगों को दूर करने में प्रभावशाली है। गरिष्ट से गरिष्ट भोजन को शीघ्र पचाता है, क्षुधा को दुर्बलता, अर्श संग्रहणी, अजीर्ण के दस्त वमनादि के लिए उत्तम योग है, नित्य रहनेवाली कब्ज पेट दर्द अफारा यकृत की दुर्बलता को दूर करता है। इसके कुछ दिन के सेवन से पक्वाशय बलवान बनता है, गर्भवती स्त्रियों की वमन को बन्द करने के लिये एक भरोसे की दवा है। यह समस्त पेट के रोगों पर सफल योग है।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा दिन में २-३ बार पेट दर्द में और अफारा अजीर्ण में गर्म जल या सौंफ अर्क से देवें। संग्रहणी अजीर्ण के दस्तों में और अर्श (बवासीर) में गोतक्र या दही जल से दें।

हिंग्वष्टक चूर्ण—सौंठ, काली मिर्च, पीपल, अजवायन, सैन्धा लवण, सफेद जीरा, काला जीरा, शुद्ध हींग समान लेकर चूर्ण बनालें।

मात्रा—१से३ माशा। अनुपान— गर्म जल या सोंफ अर्कादि से प्रातः सायं वा आवश्यकता पर सेवन करें, एक दो चमच घृत में मिलाकर भोजन के प्रथम एक दो ग्रासों के साथ सेवन करें, यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह प्रसिद्ध चूर्ण है जो आयुर्वेद के प्रत्येक औषधालय के काम में आता है। अजीर्ण, पेट दर्द, भोजन में अरुचि, अफारा, गुड़गुड़ाहट दस्तों का आना, वात रोग, वात गुल्म, आदि रोगों पर परीक्षित है। जिन मनुष्यों को भोजन करते ही शौच जाना पड़ता है। उनको गोघृत में मिलाकर भोजन के पूर्व ग्रास में प्रातः सायं सेवन करने से कुछ दिन में ही लाभ हो जाता है। पेट दर्द के लिये यदि १-२ रत्ती आक की जड़ की छाल एक मात्रा में मिला कर दिया जावे तो प्रत्येक पेट दर्द को शीघ्र ही दूर कर देता है। जिन मनुष्यों को भोजन के पश्चात् पेट में वायु भर जाता है उनके लिये उत्तम कार्य करता है।

शिवक्षार चूर्ण—इस हिंग्वष्टक चूर्ण में छोटी हरड़ ५ तोला मीठा सोढा ५ तोला हिंग्वष्टक चूर्ण ५ तोला।

गुण—यह हिंग्वष्टक चूर्ण से अधिक कार्य करता है गुण समान हैं विशेष अम्लपित्त पर कार्य करता है।

पाचक स्वादिष्ट चूर्ण-सैन्धा नमक १ सेर, नोसादर ठीकरी, कालीमिर्च, बड़ी इलायचीदाना, सुहागा भुना हुआ, यवक्षार प्रत्येक १-१ छटांक, सत् निम्बू २ छटांक, पीपरमेन्ट ६ माशा। निर्माण पीपरमेन्ट को छोड़कर शेष औषधियों को कूट छान लें, पश्चात् पीपरमेन्ट को खरल में पीसकर मिलावें, इन सारी औषधियों को उसी पीपरमेन्ट में मिलाकर खरल करें, जब अच्छी प्रकार मिल जावे तो हिंग्वष्टक चूर्ण ५ छटांक मिला देवें।

गुण—यह चूर्ण मुख को स्वादिष्ट बनाता है। पाचनक्रिया को ठीक करता है, यह बड़ा ही स्वादिष्ट चूर्ण है, इससे शीघ्र ही अरोचकतादि रोग दूर होते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दाग्नि पर स्वादिष्ट चटनी

सफेद जीरा ६ माशा, अंगूर रस १० तोला, इमली ३ तोला मुनक्का बीज रहित २ तोला, किसमिस २ तोला, तेजबल १ माशा छोटी इलायची के दाने ४ रत्ती, पीपरमेंट १ रत्ती, शीतल चीनी १ माशा, पोदीना १ तोला, सौंफ ६ माशा, अदरक रस ६ माशा, निम्बू रस २ तोला, गुलाब जल १ तोला, मिश्री ८ तोला इन सबको पीसकर चटनी बनावें। रुचि बढेगी, लाभ होगा स्वादिष्ट है।

वृषभांन चूर्ण—पांचों लवण ५ छटांक, नोशादर १ छटांक, यवक्षार १ छटांक, सज्जी ९ छटांक, सुहागा १ छटांक, कल्मीशोरा १ छटांक, फटकड़ी १ छटांक, इन सबको ११ सेर जल में घोलकर छानलें, पश्चात् एक मिट्टी के दृढ पात्र में डालकर अग्नि पर पकावें, जब शुष्क हो जाये तो इस क्षार को सुरक्षित रखें।

नं० २ औषधि—छोटी हरड़ आध सेर जामुन के सिरके में भिगो १ सप्ताह पश्चात् निकाल शुष्क करके रखें, सौंठ १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, दालचीनी १ तोला, पीपल १ तोला, लौंग १ तोला, मिर्च १ तोला, जीरा काला १ तोला, जीरा सफेद १ तोला, दोनों अजवायन २ तोला, अजमोद १ तोला, हींग १ तोला, अर्क क्षार १ तोला, मूलीक्षार १ तोला, पोदीना शुष्क १ तोला, वायविडंग १ तोला, आंवलासार शुद्ध गन्धक ५ तोला, इन सब दवाओं को और उपरोक्त क्षार को मिलाकर चूर्ण बनावें, इस चूर्ण को ७ पुट कुमारी स्वरस, ३ पुट सनाय क्वाथ, एक पुट इन्द्रायण स्वरस की देकर शुष्क करें, पीछे दस तोला सत निम्बू पीसकर मिलाकर सुरक्षित शीशी में रखें। इसकी मात्रा ३ से ६ माशा तक है। यह उदरादि रोगों में अचूक औषधि है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) शंख वटी—शुद्ध पारा एक तोला, शुद्ध गन्धक दो तोला, शुद्ध वत्सनाभ ६ तोला, काली मिर्च ९ तोला, शंखभस्म ९ तोला, सौंठ १० तोला, सज्जीक्षार १० तोला, शुद्ध हींग १० तोला, सहन-जना की जड़ की छाल १० तोला, सौंचर लवण १० तोला, सेंधा लवण १० तोला, समुद्री लवण १० तोला, नौसादर १० तोला।

निर्माण—गन्धक पारा की कज्जली करें, और दूसरी औष-धियों को पीस छानकर मिलावें, फिर तीन चार दिन निम्बू रस में खरल करके ४-४ रत्ती की गोली बनावें। अर्क सौंफ अथवा जल से सेवन करें, अथवा किसी अनुपान से दें।

मात्रा—१-२ गोली। यह विदग्ध अजीर्ण और अजीर्ण ग्रहणी, अम्ल पित्त, पेट दर्द आदि रोगों को दूर करता है।

(१६) अग्नि तुण्डी वटी—शुद्ध पारा एक तोला, शुद्ध गन्धक एक तोला, वत्सनाभ एक तोला, अजमोद, हरड़छाल, आंवला, बहेड़ा छाल, सज्जीक्षार, यवक्षार, चित्रकछाल, सेंधा नमक, काला जीरा, सौंचर नमक, समुद्री नमक, वायविडंग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल प्रत्येक एक एक तोला, शुद्ध कुचला १८ तोला।

निर्माण—पारा गन्धक की कज्जली करें और वत्सनाभ को कूट छानकर निम्बू के रस में तीन चार घण्टे खूब खरल करें और डेढ २ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—एक दो गोली भोजन के १५ मिनट पश्चात् गर्म जल, अर्क सौंफ आदि अनुपान से दें।

गुण—इसके सेवन से पाचन शक्ति मिलती है। भूख लगती है, भोजन ठीक पच जाता है और रस बनकर शरीर में चला जाता है। शौच समय पर आता है। पुराने अजीर्ण और कब्ज की यह विशेष औषधि है, पुंसत्व की न्यूनता यदि पाचन क्रिया के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण हो तो यह दवा अच्छा कार्य करती है, ज्वरादि किसी रोग के कारण दुर्बल हो गया हो और भोजन अच्छी प्रकार न पचता हो उस समय यह दवा कार्य करती है, और रक्त की न्यूनता को दूर करती है तथा कमर दर्द को नष्ट करती है।

(१७) स्वादिष्ट चूर्ण–सौंठ ६ माशा, काली मिर्च तीन तोला, पोदीना तीन तोला, अनार दाना तीन तोला, दोनों जीरे एक २ तोला, पीपल एक तोला, छोटी इलायची दाना एक तोला, चित्रक एक तोला, समाक २ तोला, केवल डोडा के बीज दो तोला, सत निम्बू १॥ तोला, सेंधा लवण ८ तोला, पीपरमेन्ट ४ माशा, मिश्री ३० तोला इनको पीसकर चूर्ण बनावें।

मात्रा—३ से ६ माशा तक।

गुण—पेट दर्द, मन्दाग्नि, बदहजमी को दूर करता है। विशूचिका के समय यदि इसको प्रयोग में लाते रहें तो विशूचिका से बच जाता है। यह चूर्ण अत्यन्त स्वादिष्ट है।

(१८) पाचक रस—इस औषधि को जो एक बार प्रयोग करके देख लेगा फिर इसी को स्मरण करता रहेगा। योग—शुद्ध गन्धक ८ तोला, शुद्ध पारा ४ तोला, लौह भस्म २ तोला, ताम्र भस्म दो तोला।

निर्माण—पारा गन्धक की कज्जली करें फिर दोनों भस्मों को मिलाकर खरल करें जब काला वर्ण हो जावे एक लोहे के कड़छे को घृत से चुपड़ देवें, पीछे कड़छे में यह औषधि डालकर अग्नि पर पिघला लें, जब जल की तरह यह औषधि हो जावे तो जो पहले हो तैयार किया है। गोबर डालकर उस पर केलापत्र रख उस पर यह कड़छे की दवा डालकर रखें, जब शीतल हो जावे तो पर्पटी निकाल लें, इस पर्पटी को कढाई में डालकर ४०० तोला निम्बू रस डालकर अग्नि पर रखकर पकावें, जब निम्बू का जल शुष्क हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जावे, गाढा होने पर सूर्य ताप से शुष्क करें, खरल में डालकर पंच कोल का क्वाथ और चाण्डोरी चोका के रस की ५०-५० पुट देवें, (पंचकोल) पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक सौंठ प्रत्येक ५-५ तोला लेवें २ सेर जल में क्वाथ करें, आधा सेर शेष रहने पर छान लें, पुट दवा पर क्वाथ या रस उपर तैरने लगे शुष्क होने पर १ पुट होती है। इसी प्रकार पुट देवें जब सारी १०० पुट समाप्त हो जावें तो दवा का भार करें। इसी दवा के भार के समान शुद्ध सुहागा और इतनी ही कालीमिर्च और एक से आधा बिड नमक इन सब को पीसकर मिला चणेक्षार की ८ पुट देवें, बस इस दवा को तैयार समझो।

मात्रा–२ रत्ती से १ माशा। अनुपान–तक्र लवण मिलाकर।

उदर संबंधी कोई रोग हो इससे शीघ्र दूर हो जाता है। संग्रहणी जैसे रोग में तक्र के साथ और भोजन तक्र ही हो समूल नष्ट करते हैं।

(१९) लालमिर्च लेकर पीसकर ४० दिन निम्बू के रस में खरल करके २-२ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा—१--२ गोली पान में रखकर खाने से क्षुधा लगती है मन्दाग्नि दूर हो जाती है।

विशूचिका का सामान्य निदान

वमन, अतिसार का होना यह प्रत्येक मनुष्य जानता है परन्तु अतिसार और हैजा में भेद करना अत्यावश्यक है, क्योंकि साधारण दस्तों को ही विशूचिका के दस्त समझकर रोगी घबरा जाता है, उसे अति कष्ट होता है। परन्तु विशूचिका और अतिसार में बहुत बड़ा भेद है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेद—विशूचिका के दस्त दो या तीन आने पर जल के समान आने लगते हैं और वमन में भी केवल जल ही आता है। दूसरे दस्तों में गाढ़ापन लिये हुये मल आता है। यह सबसे बड़ा चिह्न है जिसे सब पहचान सकते हैं कि विशूचिका के दस्तों में मूत्र बन्द हो जाता है।

मूर्च्छाऽतिसारो वमथुः पिपासा शूलभ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः।
वैवर्ण्यकम्पौ हृदये रुजश्च भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेदाः॥

अर्थ—बेहोशी, ऐंठन, अतिसार, कै, प्यास, शूल, चक्कर बाहों एवं पैरों की मांसपेशियों में संकोच, जम्भाई, दाह, कान्ति की हानि, कम्पन, हृदय में पीड़ा एवं शिर में दर्द।

विशूचिका असाध्य लक्षण ✓

भयंकर विशूचिका में दो चार दस्त एव वमन होते ही रोगी शक्तिहीन होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

(१) ऐंठन बार २ आक्षेप होना. भीतर दाह, देह अतिशीतल, वेदना, बेहोशी, शिर का इधर उधर पटकना, मूत्रबन्द, सांस का ठहर २ कर आना, श्वास शीतल हो, प्रलाप दांत होंठ, नाखून काले हो जावें, वमन करते २ थकावट हो गई हो, नेत्र भीतर को धंस गई हो, ऐसा रोगी स्वस्थ नहीं हो सकता विशूचिका का आक्रमण अर्द्धरात्री से प्रातः १॥ घण्टा रात्री शेष रहने तक ही अधिक देखा गया है।

(२) विशूचिका की चिकित्सा करनेवालों के लिये जानकारी। रोग के प्रारम्भ में ही दस्तों को बन्द करने वाली औषध नहीं देनी चाहिये, क्योंकि इससे दस्त बन्द होकर थोड़ी देर पश्चात् दस्त बड़े वेग से आते हैं। रोगी को अनुभूत औषधि देने पर भी आक्षेप, मूत्रबन्द तृषा आदि कोई उपद्रव हो तो उसका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष ध्यान रखा जावे। उपद्रवों को दूर करने का यत्न करें। रोगी के समीप कोई दुर्गन्ध न होनी चाहिये।

(३) उसके वस्त्र पात्र स्थान नितान्त शुद्ध हों।

(४) रोगी को पीने को जल नहीं देना चाहिये। जल को उबाल कर शीतल करके देवें। यदि हो सके तो लौंग, इलायची, पोदीना, सौंफ, प्लाण्डु (प्याज) को जल में उबाल कर छानकर जल देवें अथवा इनका अर्क लेकर ही पिलावें, जल को शीतल करके ही देवें या बर्फ चूसने को दें।

(५) रोगी को शीत लगने से बचाना चाहिये, उष्ण जल की बोतल भरकर दोनों कक्षों और जांघों पर रखें।

(६) शुश्रूषा करने वाले अपने पास हींग और कपूर रखें और बार बार इनको सूंघते रहें, अमृत धारा की दो चार बूंद डालकर ही जल पीवें, दिन में एक दो बार और रोगी के पास बैठने वालों को खरबूजा, ककड़ी, आम, केला, और कच्चे जल से बचना चाहिये और गृह में गुग्गल, लोबान, कर्पूर युक्त सामग्री का यज्ञ करें प्रातः सायम्।

(७) रोगी के अच्छे होने के लक्षण दिखाई न देते हों तो रोगी को एक बड़े टब में शीतल जल भरकर उसमें बिठा देवें और मनुष्य का मूत्र दवा के स्थान पर पिलाते रहें परन्तु रोगी को इसका ज्ञान न होना चाहिये।

(८) रोगी का शरीर बर्फ जैसा शीतल हो गया हो और रोगी अकड़ गया हो उस समय लोहे का टुकड़ा गर्म कर उसके दोनों पैरों के तलवों को दाग दो, और शरीर पर तिलों के तैल में जायफल अथवा कूठ सिन्धा को पीसकर मालिश करें।

विशूचिका की चिकित्सा

प्रारम्भ में एक गिलास उष्ण जल में १ तोला लवण मिला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर भीतर का मल वमन द्वारा निकाल देना चाहिये, जब वमन और अतिसार जल के समान शुद्ध आने लगे, मल लेश मात्र भी न हो तो, वमन अतिसार रोकने की औषधि देवें।

योग (१) विशूचिका के रोगी को जब तक रोग शान्त न हो तब तक जल नहीं देवें परन्तु ऐसी दशा में जब कि रोगी को मरणावस्था में मूत्रबन्धादि के उपद्रव हो रहे हों तब योग देवें। लाल मिर्च १३ नग, प्लांडु (प्याज) ५ नग, इन को शीतल जल के सम्पर्क से सिलबट्टे पर रगड़ कर कपड़छान करें, कपड़ छान करते समय १। सेर जल मिला लें, यह दवा तैयार है। इसको एक पाव पिलाते रहना चाहिये, दवा गले से उतरते ही बेचैनी दूर होने लगेगी, यदि आवश्यकता पड़ने पर एक दो बार और बनाकर दे सकते हैं, रोग शान्त होने पर जब तक ८ घण्टे न व्यतीत हो जावें दवा के जल के अतिरिक्त और कुछ भी न देवें।

(२) भुनी हींग ३ तोला, आम की गुठली की गिरी २ तोला लाल मिर्च दो तोला, अफीम, जायफल, जावित्री, शुद्ध सिंगरफ प्रत्येक एक २ तोला।

निर्माण विधि—इन सब को एक दिन निम्बू स्वरस और एक दिन लहसुन के स्वरस में खरल करके आध आध रत्ती की गोलियां बनाकर रखो।

मात्रा—१,२ गोली खांड, सौंफ अर्क, इलायची, पोदीना, जलादि अनुपान से देनी चाहिए, यह विशूचिका की उत्तम औषधि है।

(३) बढिया हींग, अफीम, कालीमिर्च, आक की जड़ का छिलका यह सब समान हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण—प्रथम कालीमिर्च को बारीक पीसलें, फिर आक की जड़ का छिलका पीसकर मिलायें, पश्चात् हींग और अफीम मिलाकर जल के सम्पर्क से मटर के समान गोलियां बनावें, मटर से छोटी हों १-१ रत्ती की गोली बनाकर छाया में शुष्क करके रखें।

मात्रा—यदि एक के और एक दस्त आने पर एक गोली देदी जाए तो एक ही गोली से लाभ हो जाता है, नहीं तो २-३ बार और देदी जावें निश्चित लाभ होता है।

बहुत ही उत्तम औषध है, प्रत्येक औषधालय में रहनी चाहिये।

(४) १ गंठा (प्याज) काली मिर्च ७ नग, इन दोनों को सिल बट्टे पर इतना बारीक पीसें जिसमें छिलके का नाम भी न रहे। और छानने की भी आवश्यकता न पड़े। और इन में उतना जल डालकर रगड़ें जितना रोगी पी सके। इसको पिला देवें, भीतर जाते ही घबराहट आदि उपद्रव शान्त हो जायेंगे, इसकी एक मात्रा ही पर्याप्त होती है, कभी कभी दूसरी मात्रा देनी पड़ती है।

(५) अर्क छालासव—आकमूलतत्वक् नवीन बारीक पीसकर २॥ तोला, रेक्टीफाइड सप्रिट २४ तोला इन दोनों को मिलाकर एक सप्ताह रखें पश्चात् छानकर दृढ़ कार्क वाली शीशी में रखें।

मात्रा—१ से ५ बून्द अनुपात सौंठ ४ रत्ती अथवा, पोदीनादि अर्क से एक-एक घण्टे पश्चात् या रोग के अनुसार शीघ्र देवें। यदि रेक्टीफाइड सप्रिट न मिले तो सञ्जीवनी सुरा अथवा ब्रोण्डी आदि कोई उत्तम मद्य लेलो।

गुण—यह विशूचिका पर अपूर्व प्रभाव दिखाता है। पेट में दाह, वेदना से अतिसार, आक्षेप, मस्तिष्क का वर्ण परिवर्तन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गया हो यह विशूचिका की प्रथमावस्था में विशेष लाभ दिखाता है। ३-४ बार देने पर ही लाभ कर देता है।

(६) कर्पूरासव—उत्तम मद्य १० छटांक, यदि मिल न सके तो मद्य के स्थान में रेक्टीफाईड सप्रिट लेवें। कर्पूर ४ तोला, इलायची छोटी, नागर मोथा, सौंठ, अजवायन, कालीमिर्च, प्रत्येक का बारीक कपड़छान चूर्ण लेवें, ६-६ माशा।

निर्माण विधि—एक शुद्ध बोतल लेकर मद्य डालें, दवाओं को जल के साथ पीस कर जल १ तोला से अधिक न हो डाल कर कार्क लगाकर ३ दिन धूप में रख छोड़ें, एक दो बार हिला देवें पश्चात् छान लेवें अथवा निथार लें छानने के लिये रबई का नयदा हो या फिलटर पेपर हो इसे अच्छी शीशी में भर कर कर्पूर मिला हिला देवें इसी में मिल जायेगा।

मात्रा और सेवनविधि—५ से १५ बून्द तक दिन में ३-४ बार अनुपात अर्क इलायची, अर्क पोदीना, अर्क सौंप, जल किसी एक में मिलाकर देवें, बालकों को ३ से ५ बून्द देवें।

गुण—हैजे के लिए जादू जैसा कार्य करने वाली दवा है। सहस्रों वैद्यों द्वारा अनुभूत है हैजे के काल में इसका १ से ४ बून्द नित्य सेवन करने से हैजे से बच जाता है। तथा पेट दर्द, मतली वमन, अतिसार ग्रीष्म ऋतु के अतिसार के लिये उत्तम कार्य करती है। बालकों को जब बदहजमी हो जाती है, कै दस्त आने लग जाते हैं। दूध हजम नहीं होता, दूध पीते ही कै कर देता है, उस समय यह अच्छा कार्य करती है। दर्द दांत, सिर में लगाने से लाभ हो जाता है। यदि इस को अहिफेनासव में समान समान मिला लिया जाये तो एक जादूवाली दवा तैयार हो जाती है। और यह दोनों आसव मिलने पर हैजा, प्रत्येक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार के दस्त, प्रवाहिका (पेचिस), पेट दर्द, मतली, कै इत्यादि के लिये एक विश्वास की दवा हो जाती है। स्त्रियों के ऋतु काल में होने वाली पीड़ा को उसी समय शान्ति देती है। अहिफेनासव अतिसार प्रकरण में लिखा है।

(७) अमृत धारा—पोपरमेन्ट १ तोला, कर्पूर १ तोला, सत् अजवायन एक तोला इन को एक शीशी में डाल देवें स्वयं जल जैसा पदार्थ हो जायेगा।

मात्रा—५ बूंद से १० बूंद अनुपान अर्क सौंफादि से हैजे में १५-१५ मिनट में देवें, जब रोग में लाभ होने लगे तो समय भी उसी तरह बढा देवें आधे २ घण्टे, एक २ घण्टे, दो दो घण्टे पश्चात् इससे हैजे को निश्चित लाभ हो जाता है इस दवा को सहस्रों दवा बेचने वाले लोग बेचकर लाखों रुपये कमा रहे हैं। यह दवा अत्यन्त उपयोगी है यदि यह एक दवा वैद्य के पास हो तो अनुपान भेद से बहुत रोगों का शमन कर सकता है। कई वैद्य इसमें एक दो दवा और मिलाते हैं। इसकी भी मात्रा समान न रखकर न्यूनाधिक करते हैं। प्रत्येक रोग पर इसकी मात्रा और अनुपान कुछ अनुभव के आधार पर देते हैं यह दवा (अमृतधारा) सब बाह्य रोगों पर जैसे दर्द खाज, दाद, चम्बल इत्यादि मालिश करने अथवा लगाने से लाभ करती है। भीतर के रोगों पर ३ बूंद से ४ बूंद की मात्रा में रोग अनुसार अर्क सौंफ, जल अथवा उष्ण जल से देने पर लाभ करती है। यदि गर्मी से रोग हुआ हो तो शीतल से, सर्दी से हुआ हो तो उष्ण जल से, कफ के रोगों में खांड मिश्री में मिलाकर ऊपर गरम जल से देवें, फोड़ा फुन्सी भिरड ततय्या मक्षिका इत्यादि विष युक्त जन्तु के लड़ने (काटने) पर डंक पर मालिश करने से लाभ होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्द सिर, प्रतिश्याय, सिर में थोड़ा थोड़ा दर्द है तो इसकी ३ ४ बिन्दु मस्तिष्क पर मालिश करें, प्रतिश्याय में नाक के मुख पर लगावें, इससे शीघ्र लाभ हो जाता है। यदि सिर दर्द कब्ज से हो तो कब्ज को दूर करें। इसी दवा को कब्ज नाशक दवा के साथ देवें, नेत्रपीड़ा (दुःखना) आंख से एक २ उंगल दूरी पर ऊपर नीचे यह औषधि लगावें इससे आंखों में से जल निकल कर उसी समय लाभ हो जाता है। धुन्ध जाला, लाली, पुष्प इत्यादि रोगों में किसी सुर्मा में मिलाकर शीशी में रखें और नित्य आंखों में डालते रहें एक तोला दवा (सुर्मा) ७ बूंद अमृतधारा को मिलाकर रखें।

दान्त दर्द— एक रूई के फोहा पर एक दो बूंद मिलाकर दान्त दर्द पर लगावें यदि दान्त में कृमि से सुराख हो तो उसमें फोहे को भर देवें और मुख को ढीला छोड़कर नीचे की ओर करके बैठ जावें, इससे दान्त का मल बहकर निकल जायेगा और किसी मञ्जन में मिला देने से मञ्जन करने से दान्तों के सब प्रकार के पायोरिया आदि कुछ समय तक लगाते रहने से ठीक हो जाते हैं।

कान का रोग सिरसों के तैल में अमृतधारा एक तोला तैल में २० बूंद मिलाकर कान में डालें इससे कान का दर्द तत्काल ठीक हो जाता है। और नित्य कान को शुद्ध करके डालते रहने से कर्णस्रावादि रोग ठीक हो जाते हैं।

नकसीर रोग में—फिटकड़ी ३ माशा अमृत धारा ३ बूंद मिलाकर नस्य लेवें इससे नकसीर का रक्त बन्द हो जाता है।

गले के रोग—तिलों के तैल में कुछ बिन्दू मिलाकर गले की मालिश करें।

चोट लगने पर—अमृतधारा लगा कर मालिश करें शीघ्र लाभ आजायेगा। यदि चोट लगने से किसी शस्त्रादि से घाव हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया हो और रक्त बहता हो तो १ छटांक जल में ६-७ बिन्दू अमृतधारा मिलाकर शुद्ध वस्त्र भिगोकर घाव पर रख देवें इस से रक्त बन्द हो जायेगा, केवल चोट मात्र हो तो मालिश करके ऊपर वस्त्र रूई बान्ध दो दर्द तत्काल बन्द हो जायेगा, विषयुक्त जीव के काटने पर बार बार मालिश करें और दूध में ३-४ बिन्दू मिलाकर पिला देवें।

शीत पित्त एवं खुजली—१ छटांक सिरसों के तेल में २०-२५ बिन्दू मिलाकर मालिश करें।

खांसी—मधु में मिलाकर चटा देवें और खांसी अधिक हो शुष्क खांसी जैसे धांस हो तो इसकी ३-४ बून्द एक रूई के फोहे पर डालकर उस पर दूसरी रूई लपेटकर मुख के द्वारा भीतर को सहारें. इस प्रकार इसी एक फोहे को मुख में रख कर सहारने से भयंकर खांसी का वेग समाप्त हो जाता है। इस फोहे को किसी डाटवाली शीशी में रखें और एक-एक घड़ी के पश्चात् सहारें तत्काल लाभ होगा, यदि इस एक फोहे से खांसी अच्छी होने में कुछ कमी रह जावे तो दूसरा फोहा बना लें।

अजीर्ण मन्दाग्नि पर—भोजन के पूर्व और पश्चात् पताशे में डालकर सेवन करने से लाभ होता है। यह दवा, ज्वर, अतिसार, पेचिस, विशूचिका, कब्ज, गुर्दा का दर्द, निमोनियां मृगी, मूर्च्छा, श्वास, पांडु आदि रोगों में अनुपान भेद से लाभ कर देती है. विशूचिका में उपद्रवों को शान्त करने के लिए योग लिखते हैं क्योंकि उपद्रवों की चिकित्सा प्रथम करनी चाहिये, यह रोगों को मार देते हैं।

पेट दर्द (शूल) पर लेप—यव का चूर्ण और यवक्षार दोनों को दही या छाछ में पीस गर्म करके विशूचिका के रोगी के पेट पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेप करने से पेट शूल दर्द दूर होता है और मूत्र भी खुलकर आ जाता है।

(२) हींग सोंठ, काली मिर्च, पीपल, सैन्धा लवण, प्रत्येक ३-३ माशा लेकर गरम जल में पीस लेप करें इससे हैजा दूर हो जाता है। और पेट दर्द शूल को उसी समय लाभ हो जाता है।

(३) मूषे (चूहे) की विष्ठा एक तोला हींग तीन माशा गरम जल में पीसकर नाभि पर लेप करने से अफारा एव दर्द दूर हो जाता है हैजा की तृषा बन्द करनेवाले योग-बर्फ चुसाने से तृषा शान्त हो जाती है।

(२) अर्क सौंफ २० तोला, अर्क गुलाब २० तोला, अक पोदीना २० तोला इन सब को मिला और बर्फ से शीतल करके रोगी को थोड़ा २ पिलावें इससे तृषा जाती रहेगी।

(३) पीपल वृक्ष को लकड़ी का कोयला ५ तोला १ सेर जल में बुझा देवें और मिट्टी के कोरे पात्र में आधा घण्टा छानकर शीतल कर लें अथवा बर्फ से शीतल करलें, इसमें से थोड़ा २ देने से तृषा शान्त हो जाती है।

विशूचिका के रोगी को निद्रा लाने के उपाय—यदि रोगी को निद्रा आ जाये तो रोगी का रोग शान्त हो जाता है।

(१) भैंस के दूध में लवण मिलाकर रोगी के तलवों पर मालिश करें निद्रा आजाती है।

(२) मकड़ी का श्वेत जाला पीस कर सुर्मा जैसा बनालें और रोगी की आंखों में डालें, इससे निद्रा आजाती है।

विशूचिका के रोगी को पथ्य ही देवें। अच्छा होने पर साबुदानादि सुपाच्य भोजन देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलसक रोग लक्षण

अपान वायु और पुरीष (शौच) बन्द हो जावे, पेट फूलकर कुप्पे की तरह हो जावे, और कै और दस्त न हों, घबराहट, वेदना हो, अपान वायु गुदा (पुरीष त्यागने का मार्ग) के मार्ग से न निकल (निस्सरण) कर ऊपर गले की ओर चढ़ जावे, तृषा अधिक हो यह लक्षण अलसक के हैं। इस रोग में भोजन करने पर न तो वमन द्वारा निकलता है। और न ही अधोदस्तों के द्वारा निकलता है। और जठराग्नि अपना कार्य नहीं करती इसलिये कच्चा ही पड़ा रहता है। इसका नाम अलसक इसीलिये रखा गया है कि वह भोजन किया हुआ आलसी की तरह पड़ा हुआ सड़ता रहता है।

विलम्बिका लक्षण

यह भी अलसक का ही भेद है। क्योंकि जिस प्रकार अलसक में भोजन नहीं पचता और पड़ा २ पेट में ही सड़ जाता है। और कै अथवा अतिसार के मार्ग से नहीं निकलता इसी प्रकार विलम्बिका में होता है। केवल इतना भेद है। अलसक में वात प्रधान होता है। जिसके कारण पेट में अफारा होता है। वह वायु गले की ओर चढ जाता है परन्तु विलम्बिका में वहीं पड़ा रहता है। और विलम्बिका में कफ और वायु इन दोनों की विकृति होने पर रोग होता है। घबराहट, पेट में असह्य पीड़ा, वेदना और प्रायः मृत्यु जैसी अवस्था रोगी की हो जाती है। लोक व्यवहार में इसको गुम हैजा कहते हैं। यह अलसक से भयङ्कर होता है।

चिकित्सा

आयुर्वेद शास्त्र ने इन दोनों को भयङ्कर और असाध्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना है। फिर भी अन्तिम श्वास पर्यन्त उपाय करना चाहिये इसीलिए इनकी औषधि लिखी है।

(१) सर्व प्रथम उष्ण जल में लवण मिला, जितना रोगी पी सके पिलावें और कै करवा देवें, इससे दुर्गन्धयुक्त उदर में पड़ा हुआ अन्न निकल जावेगा और रोगी मृत्यु से बच जावेगा यदि कै के द्वारा लवण युक्त जल ही निकल आवे और दुर्गन्धयुक्त भोजन न निकले तो दूसरा योग देवें।

(२) मुलहटी छः माशा, इन्द्र जौ छः माशा, मैनफल एक तोला, इनको बारीक पीसकर एक सेर जल में उबाल कर आध सेर शेष रहने पर छानकर पिला देवें इससे वमन द्वारा सर्व मल निकल जावेगा।

अथवा— मैनफल छः. आठ माशा लेकर बारीक पीस ढाई तोला खांड मिलाकर खिला देवें। इससे निश्चित वमन द्वारा दुर्गन्ध मल पेट में पड़ा हुआ निकल जायेगा।

(३) यव (जौ) का चून, यवक्षार, भुनी हुई हींग, सैन्धा नमक, इनको तक्र (छाछ) में पीसकर सारे पेट पर लेप कर देवें। इससे अलसक का अफारा दूर हो जाता है। विशूचिका का वमन (कै) रोकने के लिए—

(१) धान की खील ३ तोला मिश्री १। तोला इन दोनों को एक पाव जल में २ घण्टा भिगो देवें। पश्चात् छान कर, इसमें एक तोला खस छोटी इलायची छः माशा सौंफ एक तोला इन तीनों औषधियों को पीसकर मिला देवें और एक तोला श्वेत चन्दन भी पीसकर मिला देवें। इसमें से छः छः मासा थोड़ी २ देर में देने से कै बन्द हो जाती है यह पित्त की कै पर तो उत्तम प्रयोग है।

(२) राई को गरम जल में पीस कर पक्वाशय (नाभि से ऊपरवाले स्थान पर) लेप करें, जब जलन प्रतीत होवे उसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय लेप को उतार देवें नहीं तो घाव कर देगा इससे निश्चित कै बन्द हो जाती है शरीर विशूचिका का शीतल होने पर उष्ण करने के उपाय—

(१) सोंठ को पीसकर गरम करके सारे शरीर पर मालिश करने से शरीर गरम हो जाता है और आक्षेप दूर हो जाते हैं।

(२) यदि हाथ पैरों पर ऐंठन अधिक हो तो बालू रेत और नमक को बारीक पीसकर खूब गरम करें, और पोटली बनाकर इसपर छाछ छिड़क कर रोगी के हाथ पैरों पर स्वेदन देवें इससे एठन दूर हो जाती है तिलों के तेल में १ जायफल पीसकर गरम करके मालिश करें।

(३) पुरानी रूई को गरम करके शीतल स्थान पर हाथ पैरों पर विशेष करके सेक करें मूत्र बन्द होने पर एक मूषे की विष्ठा कल्मी शोरा दोनों को गरम जल में पीसकर नाभि के नीचे लेप करें इससे शीघ्र ही मूत्र आ जाता है।

(२) गरम जल के टब में बिठाने से भी मूत्र आ जाता है।

(३) सत निम्बू ६ माशा, सोडा १॥ तोला मिला इन दोनों को थोड़े २ जल में भिन्न भिन्न मिला कर रखें जब पिलाने लगें दोनों पात्रों का जल एक में मिला देवें उबलने लगेगा। इस जल को पिला देवें इस से १५ मिनट में मूत्र आजाता है।

(४) कपूर देशी की एक डली लेकर रोगी की मूत्रेन्द्रिय के मुख पर रखो। इस से १-२ मिनट में मूत्र आजाता है। यदि कर्पूर उपस्थित न हो तो लाल मिर्च से यही कार्य करो।

रोगी की हिचकी दूर करने का उपाय—क्योंकि कई बार रोग के बढने अथवा अति दुर्बलता होने पर विशूचिका के रोगी को हिचकी आनी आरम्भ हो जाती हैं जो एक भयंकर बुरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण होता है उसका रोकना अत्यन्त आवश्यक है।

(१) सैन्धा लवण एक माशा, घृत एक माशा दोनों को पीस कर नस्य लेने से हिचकी (हिक्का) बन्द हो जाती है।

(२) केले की जड़ का रस नस्य लेने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(३) उड़द और हल्दी समान लेकर इसका धूम्रपान करने से हिचकी निश्चित बन्द हो जाती है।

(४) हिकान्तक रस २ रत्ती से ४ रत्ती मधु में देने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(५) मोर पंख की भस्म ३ माशा मधु ६ माशा मिलाकर चटाने से हिचकी तत्काल बन्द हो जाती हैं।

(६) जो हिचकी रोग में उपाय और औषधी लिखी हैं उनसे हिचकी बन्द हो जाती है।

स्वेद (पसीना) बन्द करने का उपाय—कई बार आवश्यकता से पसीना अधिक आता है। इस से रोगी कमजोर हो जाता है इसको रोकना आवश्यक है।

प्रबाल भस्म ४ रत्ती शहद में मिलाकर चटाने से पसीना बन्द हो जाता है ज्वार और बाजरे का चूर्ण शरीर पर मलने से पसीना रुक जाता है।

क्रिमि रोग प्रकरण

चिकित्सा भीतर के क्रिमियों के लिये

(१) क्रिमिघ्न सर्वश्रेष्ठ योग—अजवायन खुरासानी, पलास-पापड़ा, यवक्षार प्रत्येक छः माशा, वायविडंग, पीपल, नीम के (छाया में सूखे हुये) पत्ते, सैन्धा नमक, प्रत्येक एक तोला, हींग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भुनी हुई तीन माशा, नीम की निम्बोली की गिरी डेढ तोला इन सब को वस्त्र से छानकर चूर्ण करें मधु से चने प्रमाण गोलियां बनालें अथवा चूर्ण रूप में रखें।

मात्रा—६ माशा गरम जल से प्रातः सायं देवें। यदि इस औषधी को क्रिमिघ्न क्वाथ के साथ देवें तो कभी विफल न होवें।

(२) क्रिमिघ्न क्वाथ—त्रिफला, नागर मोथा, सेंहजने की छाल, देवदारु, मूषापर्णी, वायविडङ्ग इन सबको समान लेकर कूट कर रखें,।

मात्रा—ढाई तोला लेकर साध सेर जल में क्वाथ करें, और दो छटांक शेष रहने पर छानकर पिलावें अथवा- कृमिघ्न सर्वश्रेष्ठ योग का अनुपान रूप में देवें।

गुण—यह दोनों योग एक साथ देने में बहुत लाभकारी सिद्ध हुये हैं। कैसा ही क्रिमि रोग क्यों न हो निश्चित लाभ होता है।

(३) बकायन की छाल दो तोला को दो सेर जल में क्वाथ करें, जब एक पाव शेष रहे छान कर थोड़ासा गुड़ मिलाकर पीकर सो जायें। इसी प्रकार तीन दिन करें बड़े कृमि (जूण) और छोटे कृमि मर कर निकल जायेंगे।

(४) एलवा (मुसब्बर) को कुमारी स्वरस से खरल करके मूंग के समान गोलियां बनावें, सोते समय सायं को एक, दो, अथवा तीन गोली जल से निगल जावें इससे प्रातः प्रातः एक, दो दस्त हो जाते हैं। और कृमि मरकर निकल जाते हैं। इस औषधी को कृमि समाप्त होने तक नित्य देते रहें।

(५) रीठा छाल १ तोला, गुड़ दो तोला, प्रथम रीठा छाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को बारीक पीस वस्त्रापूत करलें, पश्चात् गुड़ मिलाकर चने के समान गोलियां बनावें।

मात्रा—१ से २ गोली उष्ण जल से देवें। इसी प्रकार नित्य देने से कृमि नष्ट हो जायेंगे।

(६) वायविडङ्ग १ तोला, कमीला एक तोला, ढाक के बीज एक तोला, इनको कूट छानकर एक वर्ष पुराना गुड में मिलाकर रखें।

मात्रा—६ माशा गरम जल से नित्य देने से प्रत्येक प्रकार के भीतर के कृमि मर कर निकल जाते हैं यह उत्तम औषधि है।

(७) नीम के हरे पत्ता ४ तोला घोटकर ३ छटांक जल मिलाकर घोटें, छानकर थोड़ा सा जल मिलाकर पीवें इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त पीवें सब कृमि मरकर निकल जायेंगे।

(८) कृमि मुद्गर रस—शुद्ध पारा एक तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, अजवायन ३ तोला, वायविडङ्ग ४ तोला, शुद्ध कुचला ५ तोला, ढाक के बीज ६ तोला।

निर्माण विधि—प्रथम पारा, गन्धक की कजली बनालें पश्चात् दूसरी औषधियों को बारीक पीस छानकर कज्जली में मिला खरल करें जब सब दवा अच्छी प्रकार मिल जावें, शीशी में रखें।

मात्रा—४ रत्ती से एक माशा, अनुपान वायविडंग का चूर्ण ४ रत्ती अथवा त्रिफला क्वाथ से देवें, त्रिफला क्वाथ १॥ तोला १॥ पाव जल में पकावें जब दो छटांक शेष रहे छानकर दवा के ऊपर पिला देवें प्रातः सायं देवें इससे भीतर के सब प्रकार के कृमि मरकर बाहर निकल जाते हैं। बड़ा ही श्रेष्ठ है।

(९) सायं को कृमि के रोगी को खूब पेट भरकर मीठा खिलाओ प्रातः एक पाव शीत (तक्र) में एक तोला कमीला मिला-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर पिला देवें, दूसरे दिन ४ तोला एरण्ड तेल (कैस्ट्रायल) और १० बूंद तारपीन तैल मिलाकर दूध में पिला देवें इससे भीतर के सब प्रकार के कृमि मरकर निकल जाते हैं। यदि इस रोग के पश्चात् दूसरी दवाई खाना प्रारम्भ करें नित्य कुछ दिन तो कृमि पुनः नहीं होते।

(१०) मलाशय में रहनेवाले कृमि जिसको चुनने कहते हैं। यह एकबार दवाई लेने से मर जाते हैं परन्तु कुछ दिन पश्चात् पुनः हो जाते हैं। यह बड़े हठी होते हैं इनके लिये उपरोक्त कोई एक दवा खिलावें और निम्नलिखित प्रयोग भी साथ करें तो इनसे पीछा सदा के लिए छूट जाता है।

प्रयोग—शौच (टट्टी) के पश्चात् जब शौच के स्थान को शुद्ध करो तो जल के स्थान पर निम्ब पत्तों के क्वाथ (काढा) से शुद्ध करो नीम के १० तोला पत्तों को १॥ सेर जल में पकावें, जब १, १। सेर जल शेष रहे इस नीम क्वाथ से हाथ से गुदा को शुद्ध करें। इस के पश्चात् नीम की २-३ कोमल पत्ती लेकर गुदा के भीतर रखें। यह प्रयोग नित्य करने से इनसे सदा के लिए पीछा छूट जायेगा।

बाह्य कृमियों की चिकित्सा

१ मूली के रस में पारे को खरल करके शिर में लगाने से जूएं मर जाती हैं।

२ नीम की निम्बोली पीसकर शिर में लगाने से जूएं मर जाती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ फिनायल को चार गुणे जल में मिलाकर शिर में अथवा आंख कुक्षि और अन्य स्थान पर जहां चमजूएं हों लगाने से २-३ बार के लगाने पर ही मर कर उतर जाती है।

४ फिनायलकी गोली जिसको लोग ऊनी रेशमी वस्त्रोंमें रखते हैं, सिरसों के तैल में पीसकर मिलालें और क्रिमियों के स्थान पर लगावें इससे सब क्रिमि मर जाते हैं। इस औषधि से पशुओं के चीचड़ आदि क्रिमि मर जाते हैं। और कहीं कान नाक घाव में क्रिमि हों सब मर कर बाहर आजाते हैं। उत्तम औषधि है।

पांडू (पीलिया) रोग प्रकरण

अधिक खटाइयां खाना, सुरापान, व्यभिचार, मिट्टी आदि के खाने से यह रोग होता है। पांडू रोग पांच प्रकार का होता है।

सामान्य निदान

पीलिया का रोग होने पर कानों में शब्द होता है। मन्दाग्नि अङ्गों का टूटना, निद्रा का आना थका हुआ होना, श्वास फूलना अरुचि आंख और नाखून का पीला हो जाना आंखों के भागों में शोथ होना, शौच, मूत्र, का पीला अथवा श्वेत होना, मुख में जल का आना, इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। पांडू रोग के दो भेद और हैं कामला, हलीमक।

पांडू रोग के असाध्य लक्षण

१ पांडू रोगी की आंखें दांत, नाखून पीले हो गये हों, सब पदार्थ पीले ही दिखाई देवें—इसको असाध्य जानो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ त्वचा पीली हो जावे, पुरीष, मूत्र पीले हो जावें, अथवा त्वचा का वर्ण श्वेत हो जावे और कै हर समय आती हों, मूर्च्छा जैसी अवस्था बनी रहे, तृषा के कारण दुःखी रहता हो वह भी अच्छा नहीं होता।

३ पांडू रोगी के हाथ पैर पर और शिर में शोथ हो मध्य का भाग पतला हो अथवा हाथ पैर शिर सूख जावें और मध्य भाग शोथ युक्त हो, उपस्थ गुह्य इन्द्रियों पर शोथ आजावे और शरीर का वर्ण मुर्दे जैसा हो जावे उसकी मृत्यु निश्चित है।

कामला का असाध्य लक्षण

१ कामला रोगी का पुरीष(शौच) काला, मूत्र पीला शरीर पर शोथ नेत्र मस्तिष्क और कै के मल का वर्ण नितान्त लाल हो और किसी बात का ध्यान न हो वह भी आयुर्वेद की दृष्टि से असाध्य है।

२ कामला वाले रोगी को जलन (दाह), भोजन में अरुचि, तृषा रोग, अफारा, तन्द्रा मूर्च्छा मन्दाग्नि, और कोई भी बात याद न रहे वह भी यमपुर में जायेगा

३ कुम्भ कामला में जिस प्रकार घड़े (कुम्भ) का मुंह छोटा और पेट बड़ा होता है इसी प्रकार रोगी का पेट अफारा से फूल जाता है उस रोगी को कै अतिसार मतली (सुखी कै) आती रहे। बिना परिश्रम के थकावट हो, श्वास कास रोग हो जावे यह रोगी भी असाध्य है।

चिकित्सा

१ योग—नोसादर जोहर ६ माशा, कलमी शोरा ६माशा, रेवन्द खताई १। तोला, अबक्षार मतली ६ माशा, सोहा मीठा खाने

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ३ माशा, इन सबको मिला पीसकर रखें,मात्रा २ से ८ रत्ती रोग की प्राबल्यता में १ माशा अथवा १॥ माशा देवें। अनुपान जल दिन में ३ बार देवें। यह पांडू रोग की सुपरीक्षित औषधि है यकृत दर्द के लिये भी अच्छा कार्य करती है।

२ इमली का फल (अमली कटार)२ सेर २॥ तोला आधा सेर जल में भिगोवें शीतल जल और मिट्टी के कोरे पात्र में ३० ३५ मिनट के पश्चात् मल कर छान लेवें, छने हुए जल में मिश्री मिलाकर इससे पूर्व ६माशा बालगु के बीज फांककर ऊपर मिश्री इमलीवाला जल पीवें। प्रातः सायं को पीवें। रोग थोड़ा हो तो एक समय ही पीवें। एक सप्ताह में निश्चय से पाँडू(पीलिया) का रोग शान्त हो जाता है यह दवा अनेकों बार की अनुभूत है।

३ कल्मी शोरा १० तोला, यवक्षार असली, सुहागा विलायती, फिटकड़ी श्वेत, नोसादर ठीकरी, प्रत्येक ५-५ तोला।

निर्माण—इन सबको कूटकर लोहे की कढ़ाई में डालकर अग्नि पर रखें, जब दवा पिघलने लगे तो किसी चम्मच आदि से चलाते रहें, जब पिघल कर एक जीव हो जावे तो दवा को अग्नि से उतार लेवें। और शीतल होने पर पीसकर दृढ़ कारकवाली शीशी में रखें।

मात्रा—१ से डेढ माशा दिन में तीन बार नारियल जल अथवा जल से देवें। या किसी अच्छे अनुपान से देवें।

गुण—यह बहुत अच्छा मूत्रल पसीना लानेवाला, कफ को पतला करके बाहर निकालनेवाला, पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी (पथरी) आदि रोगों पर चमत्कारी योग है। अमलपित्त, पेट दर्द, चढ़े हुए ज्वर में देने से ज्वर की गरमी को न्यून कर देता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पांडू रोग पर सहस्रों बार का परीक्षित है। पांडू कामला के बिगड़े हुए रोगी इसके द्वारा जो डाक्टर लोग चिकित्सा करते थक गए परन्तु रोग टस से मस न हुआ। इसकी एक-दो मात्रा देते ही लाभ प्रतीत होना प्रारम्भ हो गया। पथ्य से रहें गोदुग्ध चावल देवें, जौ का दलिया भी दे सकते हैं।

पांडू कामला पर नस्य

४ कड़वी तुरई लेकर जल में भिगो मसल कर छानलें पश्चात् उस जल की ड्रॉपर आदि से नाक से १० बूंद डालें और दो मिनट तक सीधा लेटा देवें फिर बैठा दें जिससे नाक, आंख, मुख से जल निकल कर रोग शान्त हो जावे। यदि एक बार के करने से कुछ कमी रह जावे तो दूसरे तीसरे दिन भी प्रयोग कर सकते हैं यह अत्यन्त उपयोगी है तथा अनेकों बार अनुभूत है।

५ शंखभस्म १ तोला मण्डूर भस्म १ तोला, कसीस भस्म १ तोला, शृंग भस्म १ तोला, इन सबको मिलाकर रखें।

मात्रा—१-१ माशा गोमूत्र से प्रातः सायं गोमूत्र को कपड़े से छानें।

पांडू रोग पर नेत्रों में डालने का अञ्जन

निम्बू का रस नेत्रों में डालने से पांडू रोग शीघ्र ही समाप्त हो जाता है।

विशेष—कड़वीतुरई को सायंकाल छिलका हटाकर भिगो देवें, और रात्रि में बांई आंख में रखें इससे नाक में जितने कृमि होंगे सब एक-एक करके बाहर आजायेंगे। जिस उन्माद के रोगी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को डाक्टर लोग विद्युत लगाकर भी ठीक नहीं कर सकते वे इससे अच्छे होते देखे हैं।

मंजीठ १० तोला, शुद्ध मण्डूर अथवा शुद्ध लोहचूरा १० तोला, लाल शक्कर १- तोला, इन तीनों को बड़े तरबूज में भर देवें और एक लोहे के पात्र में सुरक्षित रखें। शुष्क होने पर पीस छानलें, दवा तैयार है।

मात्रा—४ रत्ती नवनीत (मक्खन) में रखकर नित्य प्रति सेवन करें।

लौह भस्म, मण्डूर भस्म, पुनर्नवादि मण्डूर, नवायस लौह, पंचामृत लौह मण्डूर इस रोग के लिये अति उपयोगी है तथा कुमार्यासव और लोहासव भी उत्तम हैं।

पांडू रोग में पथ्यापथ्य

पथ्य—चावल, जौ, गेहूँ, मूली, कद्दू, तुरई, टिण्डे, मूंग की दाल, मिश्री की दल।

अपथ्य—पेट भरकर भोजन करना, सुरा (शराब) गरम पदार्थ, लाल मिर्च वर्जित हैं।

स्नान- शीतल जल से स्नान न करना गरम जल में तौलिया भिगोकर निचोड़ कर त्वचा पर खूब रगड़ कर पूछें जिससे शरीर के छिद्र खुल जायें और दूषित मल पसीने द्वारा) बाहिर निकल जावे।

रक्त पित्त रोग

पित्त रक्त में प्रवेश करके दूषित कर देता है उसमें तीव्रता कर देता है।। फिर मुख, आंख, नाक, कान, मूत्रेन्द्रिय, गुदा से रक्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहने लग जाता है। इसी को ऋषि मुनियों ने रक्तपित्त की संज्ञा दी है।

रक्त पित्त का कारण

अधिक धूप में भ्रमण और अति व्यायाम करना, चिन्ता, क्रोध पैदल यात्रा अधिक करना। सम्भोग, अधिक तीक्ष्ण, भारी, नमकीन, पदार्थों का अधिक प्रयोग करना इनसे पित्त नसों में रक्त को उष्ण करके बाहिर निकाल भयंकर रोग पैदा कर देता है।

असाध्य लक्षण

(१) रक्तपित्त के रोगी की जिह्वा होठ का वर्ण नितान्त रक्त वर्ण हो जावे अथवा इनमें से रक्त आवे इस प्रकार के रक्त पित्त के रोगी का रक्त मुखादि अनेक स्थानों से आता हो वह मृत्यु को प्राप्त होता है।

(२) रक्त की वमन आयें—नेत्र रक्त वर्ण हों और सब पदार्थ लाल दिखाई दें उसकी मृत्यु समीप ही है।

(३) रक्त पित्त के रोगी का रक्त मांस के धोवन के समान हो अथवा दुर्गन्ध लिए हुए पीप के समान या मुर्दे जैसी दुर्गन्ध युक्त रक्त आवे वह भी असाध्य ही है।

(१) चिकित्सक के लिए जानकारी—रक्त पित्त का रोगी बलिष्ठ हो और भोजन भी पचा लेता हो। ऐसे रोगी का रक्त शीघ्र बन्द करने का यत्न न करना चाहिये क्यों कि इस प्रकार के रोगी का रक्त बन्द होने पर नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं। जैसे—विद्रधि कुष्ठ विसर्प, यकृत, प्लीहा, हृदय रोग, बवासीर भगंदर आदि रोग हो जाते हैं।

(२) यदि रोगी कमजोर हो अथवा बहुत अधिक मात्रा में रक्त जाता हो तो इस परिस्थिति में शीघ्र ही रक्त बन्द करना अति-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है। रक्त पित्त का रोगी यदि बलवान है तो वमन विरेचन अवश्य कराना चाहिये। ऊर्ध्व गामी रक्त पित्त में विरेचन अधोगामी में वमन करावें।

चिकित्सा

(१) पीपल की लाख डेढ तोला, पीसकर बकरी के १॥ पाव दूध में मन्दाग्नि से पकावें जब १ पाव शेष रहे छान कर मिश्री मिला कर पीवें २-३ मात्रा में ही लाभ होगा।

(२) कहरवा बबूल (कीकर) का गोंद, निसास्ता, कतीरा, खीरे के बीज, कद्दू के बीज प्रत्येक १० १०, ग्राम अनार के फूल अकाकिया, प्रत्येक ५-५ ग्राम इन सब को कूट छान कर ईसबगोल के लुआब में खरल करके गोली बनावें।

मात्रा—५ ग्राम। अनुपान—जल।

गुण— कफ में, नकसीर, बवासीर, ऋतु में अधिक अथवा रक्तप्रदर, आदि किसी शरीर के अङ्ग से रक्त बहता हो इसके सेवन करने से बन्द हो जाता है। अत्युत्तम योग है।

(३) धनिया की ताजी पत्ती २ छटांक, शीतल चीनी (कबाब चीनी) ३ माशा इन दोनों को पीस कर वस्त्र से छान लें, ओर मिश्री अथवा खांड मिला कर देवें, दिन मे २-३ बार देवें, इस से रक्त पित्त का रक्त बन्द हो जाता है। जो गरमी के कारण मुख से जाता हो।

(४) धनियां सूखा, आंवलां सूखा, बासांपत्र, मुनक्का, पित्त-पापड़ा, खस, रक्त चन्दन, सुगन्धवाला प्रत्येक ३-३ माशा यह एक मात्रा है। इसी हिसाब से अधिक खिलानी हो तो लें।

गुण—रक्तपित्त, नकसीर, खांसी में कफ मिश्रित रक्त बाहिर आना की सुपरीक्षित औषधि है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) ककरोन्दा (गन्धीली) का रस १ सेर कालोमिर्च, सेलखड़ी, प्रत्येक २-२ तोला लेवें ।

निर्माण विधि—ककरोन्दा के रस को कलईदार पात्र अथवा मिट्टी के पात्र में रखकर मन्दाग्नि से पकावें, पकाते समय लकड़ी से हिलाते रहें, जब गाढ़ा हो जावें, उतार कर शीतल होने पर कालोमिर्च और सेलखड़ी को पीसकर कपड़छान करके मिलाकर एक सप्ताह तक खरल करके झाड़ीबेर के समान गोलियां बनालें ।

मात्रा—१-४ गोली । अनुपान जल ।

गुण—यह प्रयोग रक्तार्श रक्त पित्त रक्तप्रदर मूत्र पुरोष नाक मुखादि किसी भी मार्ग से रक्त आने को शीघ्र बन्द करता है सुपरीक्षित है । पथ्य रोगानुसार ।

(६) गेरू एक सेर लेकर पीसलो फिर इसमें में आंवला ताजा का रस, शतावरी का रस बकरी का दूध, रसौत, केले का रस, जल पीपल का रस, प्रत्येक की ७-७ भावना देवें और छाया में सुखा लेवें पीसकर रखें ।

मात्रा-एक एक माशा दिन में ३ बार देवें अनुपान बकरी का दूध ।

गुण—रक्तातिसार रक्तपित्त क्षय रक्तार्श नकसीर रक्तप्रदर आदि शरीर से रक्त जाने पर जादू जैसा कार्य करता है । महिनों का जानेवाला रक्त २-३ दिन में बन्द हो जाता है ।

(७) बालू रेत जिसमें मिट्टी न मिली हुई हो उसको पीस कपड़े में से छानकर समान मिश्री मिला रखें ।

मात्रा-३-३ माशा । अनुपान- बकरी के दूध से सेवन करने से सब प्रकार का रक्त पित्त शान्त हो जाता है ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) रक्तस्रावघ्न—फिटकड़ी ५ तोला, सुरमा काला १० तोला, कत्था सफेद ५ तोला, सेलखड़ी पांच तोला अकाकिया २० तोला, दमउल खवाइन १२॥ तोला, कीकर गोंद १२॥ तोला कतीरा, गोंद, समुद्र झाग २५ तोला, मुक्ता शुक्ति २० तोला, प्रवाल शाखा पिष्टी ५ तोला और मुक्तापिष्टी २॥ तोला इन सबको भिन्न भिन्न कूट पीस वस्त्रापूत करें पुनः फिटकड़ी, सुरमा. सेलखड़ी, मुक्ताशुक्ति दमउल खवाईन, को अर्क गुलाब में पिष्टी करें, सूख जाने पर बाकी औषधियों को मिलाकर खरल करके एक जीव करलें जितना बारीक होगा उतना लाभदायक होगा।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशा तक आवश्यकतानुसार २ से ८ माशा तक एक दिन रात में। अनुपान—रक्तप्रदर गर्भस्रावादि में चावलों के जल से अथवा कुम्हार की मिट्टी के जलसे, रक्तपित्त नकसीर मुख से आनेवाले रक्त में पेंठे के स्वरस से, आंवले के स्वरस से अथवा जल से तात्कालिक आवश्यकता में केवल जलसे आध आध घण्टे के अवकाश से देवें। रक्त बन्द होने पर समय बढाकर ३ ४ घण्टे में देवें।

उपयोग—यह औषधी शरीर के किसी भाग से जाते हुए रक्त को तत्काल रोक देती है। विशेष करके यह प्रदर, रक्तपित्त बवासीर नकसीर गर्भस्राव को रोकने में ८५ प्रतिशत सफल प्रयोग है। जहां डाक्टर और इन्जैक्सन फैल हो गये हों वहां भी यह योग कभी चूकता नहीं।

(९) रक्त बन्द—यह योग पेगाम आयुर्वेद अक्तूबर १९५४ में से वैद्य शास्त्री कृष्णदयाल अमृतसरी का है। योग क्या जादू है। बड़े मार्केका योग है। कैल्शियम लैक्टिट १ तोला, गैलक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एसिड एक तोला, कहरवाशपी १ तोला दमउलखवाइन एक तोला इन सब को बारीक पीसकर मिलालें।

मात्रा—१-२ माशा यदि रोग अधिक हो तो दिन में ३-४ बार देवें, नहीं तो २ बार देवें।

अनुपान-अनार स्वरस, अनार शर्बत, अञ्जबार शर्बत। अंजबार क्वाथ, बांसाकं, बकरी के दुग्धादि से देवें। यदि रक्त घाव (जख्म) से आ रहा हो तो औषधि घाव पर छिड़क देवें और ऊपर पट्टी बांध देवें नाक से खांसते, मूत्र द्वारा, वमन द्वारा ववासीर, इत्यादि सब प्रकार के रक्त आने को बन्द करती है। यह राजवैद्य कृष्ण दयाल शास्त्री का पूर्ण अनुभूत है। और मैंने इसकी बहुत बार परीक्षा की सफल प्रयोग है। आप इसको देते ही प्रसन्न होंगे।

(१०) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, प्रबाल भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, शीशा (सिक्का) भस्म, वंग भस्म, यह सब समान लेकर प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करें, पश्चात् सबको मिलाकर चन्दन श्वेत का क्वाथ, कमल पुष्प रस, मालती पुष्परस, बांसा पत्र रस, हरा धनियां रस, हरा सितावर रस, मुसली सम्भका रस, वट की दाढी का क्वाथ, हरी गिलोयरस, इन सभी औषधियों का रस, यदि रस प्राप्त न हो तो क्वाथ करलें। और प्रत्येक रस अथवा क्वाथ की ३-३ भावना देवें, और खरल करते रहें। पश्चात् २-२ रती की गोली बनायें, प्रातः सायं एक २ गोली दें।

अनुपान— बांसा पत्र रस एक तोला, शहद ३ माशा, मिश्री ६ माशा, मिलाकर गोली सेवन करायें। यह आयुर्वेद का अनुपम योग रक्तपित्त रोग को दूर करने में अत्युत्तम है इस प्रयोग से सब प्रकार का रक्त पित्त दूर हो जाता है। अनेक बार परीक्षित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(११) उशीरासव-भी इसके लिए अमृत समान है।

(१२) नकसीर पर विशेष दवाएं—चने की दाल दो तोला सायं को गोदूध कच्चे में भिगो देवें, प्रातः उस दाल को खालें यदि न खाई जाये तो थोड़ी सी खाण्ड मिला देवें। कैसी ही नकसीर हो लाभ होगा।

(१३) धारोष्ण बकरी का दूध मिश्री (खाण्ड) मिलाकर प्रातः सायं पीने से किसी दवाई से न हटनेवाला नकसीर का रक्त बन्द हो जाता है। अनेकों बार का अनुभूत है।

(१४) नस्य नकसीर पर—फिटकड़ी भुनी हुई गाय का आरण्य उपला की भस्म (राख) कागज की भस्म इन तीनों को समान लेकर पीस लें और नकसीर वाले रोगी को सुघाएं तत्काल लाभ होगा, अनुभूत है।

(१५) गोपी चन्दन अनार का छिलका, इन दोनों को समान लेकर पीसकर नस्य लेने से नकसीर का रक्त बन्द हो जाता है।

(१६) १ छटांक गोमूत्र पीने से तत्काल नकसीर का रक्त बन्द हो जाता है।

(१७) कत्था, माजुफल, सुर्मा काला, हीरा कशीश, अफीम समान लेकर बारीक पीसकर वस्त्र से छानकर नस्य तैयार करें, नलकी से नाक में फूंक देवें नकसीर के लिए उत्तम औषधि है।

(१७) गाय के गोबर का रस सूंघने से अथवा नस्य लेने से नकसीर अवश्य बन्द हो जाता है।

(१८) मक्खन (नवनीत घृत) को १०० बार शीतल जल से धोकर थोड़ा सा देशी कपूर मिलाकर माथे पर लेप करने से नकसीर बन्द हो जाता है।

(१९) मुलतानी मिट्टी का लेप करने से नकसीर बन्द हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२०) शीतल जल की धार शिर पर देने से नकसीर बन्द हो जाता है।

(२१) नकसीर बन्द—(जादू) जिस नाक से रक्त आता हो तो उससे विपरीत भुजा को किसी रस्सी आदि से कसकर बांध देवें, शीघ्र लाभ होगा। यदि दोनों नाकों से रक्त आता हो तो दोनों भुजायें बांध देवें। विशेष ज्ञातव्य-इस दवा से रक्त बन्द हो जायेगा। परन्तु दुर्गन्ध युक्त रक्त निकाल देना चाहिये नहीं तो अन्य रोग हो जाता है इसलिए तब बांधना चाहिये जब रक्त बन्द होने में न आता हो।

रक्तपित्त में पथ्यापथ्य

पथ्य—चावल, साबुदाना, शीतल जल, घिया, टिंडे, यव का चूर्ण पुराने गेहूँ, बकरी एवं गो दूध, प्रातः सायं भ्रमण, चान्द की चान्दनी में बैठना, चान्द की ओर टकटकी लगाकर देखना यह अनुकूल है।

अपथ्य—उष्ण, शुष्क पदार्थ, करेला, गरम मशाले, लहसुन प्याज (गण्ठा) रात्री का जागना, धूप में रहना, सम्भोग करना दातुन करना, भागना (दौड़) व्यायाम करना यह सब वर्जित हैं।

अम्ल पित्त

कारण—यह रोग उष्ण, तीक्ष्ण खट्टे पदार्थ अधिक सेवन करने से होता है।

सामान्य निदान

पक्वाशय में अधिक खटाई होने के कारण किया हुआ भोजन तत्काल खट्टा होकर छाती और पेट में जलन, खट्टी डकारों का आना और गले में जलन होना, मुख में खूब खट्टा तेजाब जैसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल आजाना, जुकाम नजला (प्रतिशाय) का होना आदि लक्षण होते हैं।

अम्ल पित्त के रोगी में उपरोक्त न्यूनाधिक लक्षण पाए जाते हैं। और आयुर्वेद ने इसको ऊर्ध्वगामी और अधोगामी २ प्रकार का मुख्य माना है।

ऊपर को होनेवाला— खट्टी डकारों का आना, मुख में खट्टा जल और वमन का होना।

नीचे का अम्ल पित्त— लाल पीले जलन के साथ दस्तों का आना, पेट की आतों में जलन होती है। शरीर पर लाल रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

असाध्य लक्षण

अम्ल पित्त नया तो साध्य होता है। और पुराना याप्य होता है। जब तक औषधि खाते रहें अथवा भोजनादि पर संयम रहे तो दबा रहता है। और जो लोग आहार विहार में संयम नहीं रखते उनका अम्ल पित्त रोग असाध्य होता है।

चिकित्सा

(१) छाया में शुष्क तुलसी पत्र एक तोला, सौंफ को कूट कर छाल (फोलर) उड़ाकर जो दाना बचे उस को सौंफ के चावल कहते हैं एक तोला, कालीमिर्च एक तोला, नोसादर एक तोला, काला लवण एक तोला, इन सब को कूट छान कर रखें।

मात्रा—एक माशा दिन में तीन बार। अनुपान जल से देवें।

यह पेट की खट्टी डकारों को दूर कर देती है। खट्टी डकार आदि रोग दूर हो जाते हैं।

(२) इस रोग में पक्वाशय में (कलेजे में) जलन होती है। यदि उसको वमन द्वारा दूर कर दिया जावे तो रोग में शान्ति हो जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वमन कारक योग

फिटकड़ी २ भाग, पूर्वी तम्बाकू ३ भाग मिलाकर पीसलें प्रातः मूंग चावल की खिचड़ी घृत मिलाकर सायं खिला देवें। अथवा घृत खांडादि पदार्थ खिला देवें, पश्चात् यह दवा ३ माशा लेकर गर्म जल से सेवन करावें, इस से दुर्गन्धयुक्त मल निकल जायेगा और जब तक भूख न लगे खाने को कुछ न देवें। भूख लगने पर सुपाच्य भोजन देवें इस से शाघ्र लाभ होगा और खटाई उष्ण तीक्ष्ण पदार्थ छोड़ देवें।

(३) लीलाविलास रस दो रत्ती, लोकनाथरस दो रत्ती, मिलाकर प्रातः सायं शहद से देवें और दोनों समय भोजन के पश्चात् १-१ माशा नारीकेल लवण से सेवन करें उपरोक्त रसों की १ मात्रा है इसी प्रकार रोग शमन होने तक देते रहें यह योग अनेकों बार का परीक्षित है।

(४) नारीकेल लवण—जल से भरा हुआ एक नारियल लेवें उसकी जटा को दूर हटाकर फिर चाकू से उसके मुख वाले सुराख को फोड़ देवें जल को बाहिर निकाल देवें और इसी सुराख से बारीक पीस कर १० तोला सेन्धा लवण भर देवें फिर सुराख को बन्द करके कपड़ मिट्टी कर धूप में सूखा लें पश्चात् दो सेर उपलों की आग देवें आग तथा नारियल के शान्त होने पर कपड मिट्टी हटा, नारियल समेत नमक को पीसकर रखें।

मात्रा—१ से २ माशा प्रातः सायं जल से देवें। अम्लपित्त की उत्तम औषधी है। उपरोक्त योग के साथ इसी का प्रयोग करना है।

गुण—छोटे पीपल को पीस चूर्ण बनाकर १-१ माशा नारीकेल लवण का सेवन करने से सब प्रकार के शूल को लाभ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। यकृत को लाभ करती है यकृत दर्द में ३-४ रत्ती नोसादर के साथ सेवन करें, जब यकृत दर्द का चक्र चले उस समय दिन में ३-४ बार गर्म जल से देवें। गुर्दे के दर्द में ५-६ रत्ती यवक्षार मिलाकर देवें। अवश्य लाभ होगा।

(५) शिवक्षार चूर्ण जो मन्दाग्नि प्रकरण में लिखा है वह अम्ल पित्त के लिये अत्युत्तम है।

(६) वज्रक्षार जो पाण्डू रोग प्रकरण में लिखा है, वह भी अम्ल पित्त में अत्युत्तम है।

(७) अविपत्तिकर चूर्ण—सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़, छाल, बहेड़ाछाल, आंवला, नागर मोथा, विड़लवण, वायविडंग, इलायची छोटी, तेजपात, प्रत्येक १-१ तोला निसोथ ४४ तोला, खाण्ड ६६ तोला, इनमें कूटने वाली औषधियों को पीस छानकर सब औषधियों को मिलाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ से ६ माशा शीतल जल से प्रातः सायं भोजन से पूर्व देवें, अथवा नारियल के जल से देवें। और भोजन केवल गो दूध चावल देवें।

गुण—अम्लपित्त जिसके साथ कब्ज और मूत्र की रुकावट हो शीघ्र ही लाभ हो जाता है। कैसा ही अम्लपित्त हो इससे अच्छा हो जाता है।

(८) लीलाविलास रस, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लौहा भस्म, यह सब समान लें।

निर्माण—प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करें, फिर दूसरी भस्मों को मिलाकर आवला, बहेड़ा छाल के रस अथवा क्वाथ से तीन दिन तक खरल करें, फिर भांगरा स्वरस से एक दिन खरल करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२/

मात्रा—३-३ रत्ती की गोली बनाकर १-१ गोली प्रातः सायं शहद में मिलाकर ऊपर से दूध पीवें।

गुण—यह अम्लपित्त की उत्तम औषधि है। कलेजे की जलन वमन खट्टी डकारों तथा कण्ठ की जलन पेट दर्द में काम करता है इसी रस को नं० ३ योग में मिलाकर सेवन करना बताया है।

(९) हरड़ छाल, अथवा छोटी काली हरड़, को पीसकर रखें मात्रा—६ माशा शहद से मिलाकर प्रातः सेवन करें, ऊपर से जल पीलें, ३-४ दिन ही नया अम्लपित्त दूर हो जाता है।

(१०) धान की भस्म को ६-६ माशा प्रातः सायं भोजन से पूर्व जल से लेने से अम्लपित्त दूर हो जाता है।

अम्लपित्तवाले को पथ्य-ऊपर वाले अम्लपित्त को वमन करायें नीचेवाले अम्लपित्त को दस्त देवें। इससे अम्ल पित्त शान्त हो जाता है। इसके पश्चात् कोई औषधी देने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

भोजन – पुराने चावल, पुराने जौ, पुराने गेहूँ, और पुराना मूंग देवें। इस रोग में अन्न पुराना ही देवें। खांड, बूरा, मिश्री, शहद, पेठा, बथुवा, मीठे अनार आदि पदार्थ देवें। यदि रोग बढ़ा हुआ हो तो दूध चावल अथवा दूध साबूदाना, दूध जौ का दलिया ही, देवें।

अपथ्य– गर्म शुष्क, खट्टे पदार्थ, नया अन्न, उड़द, पेठे की मठाईयां, दही, लाल मिर्च, शराब आदि सेवन न करें।

स्वरभेद गला बैठना

कारण—बहुत उंचा बोलना, गल (कंठ) में चोट लगना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२१

विषखाना अथवा विषयुक्त पदार्थ खाया जाना आदि कारणों से स्वर भेद रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

जो मनुष्य सरलता से नहीं बोल सकता, और धीरे धीरे बोला जाता है। बोलते समय कष्ट प्रतीत होता है। इसी को स्वरभेद संज्ञा दी है। यह रोग आयुर्वेद की दृष्टि से छः प्रकार का होता है।

असाध्य लक्षण—अत्यन्त दुर्बल हो गया हो, बहुत वृद्ध हो, और राजयक्ष्मा (तपेदिक) आदि रोग से कमजोर होकर गला बैठ गया हो। स्वर भेद रोग पुराना हो गया हो, मेदज अथवा सन्निपातज हो, तो स्वर भेद रोग असाध्य होता है।

चिकित्सा

(१) एक बड़ी अदरक की गांठ लेकर, उसके बीच में एक गढा खोदकर थोड़ी सी हींग और काला लवण भर देवें। इसके ऊपर पान का पत्ता लपेट कर ऊपर धागा बांध देवें। उसके ऊपर एक उंगल मोटा मिट्टी का लेप कर देवें। अग्नि में डाल देवें, जब मिट्टी लाल रंग की हो जावे तब निकाल मिट्टी दूर करके पीस लें, जब खूब पीस जावे तो चने के समान गोलियां बना लेवें।

मात्रा—१-१ गोली ३-३ घण्टे में चूसें।

गुण—नजले के कारण गला बैठ जाने पर उत्तम है।

(२) कुलिञ्जन १ तोला, सुहागा कच्चा १ तोला, इनको पीस चने के समान गोलियां बनावें छाया में सुखाकर चूस लें इससे स्वर भंग रोग दूर होता है।

(३) १ माशा मुलहटी को बारीक पीसकर सोते समय पान पत्र में लपेट कर दान्तों के बीच दबाकर सो जावें प्रातः शुद्ध स्वर हो जावेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) सौंफ १ तोला, मूलहटी ६ माशा, छोटी इलायची ३ माशा, मिश्री १ तोला, शहद १ तोला, मधु से भिन्न सब दवाओं को कूट छान मधु मिलाकर सुरक्षित रखें जब मुख में किसी प्रकार का रोग दीखे तो थोड़ी सी खा मुख में रखकर चूसें, दिन में ३ बार प्रयोग करें, गले में कैसा भी रोग क्यों न हो दूर होकर गला मधुर हो जाता है।

(५) अरनी के फूलों का चूर्ण ३ माशा नित्य प्रातः सायं गोदुग्ध (सुखोष्ण) के साथ सेवन करने से ७ दिन में स्वरभंग नष्ट होता है, और स्वर बहुत तीव्र होता है।

(६) सौंठ, अकरकरा, दोनों को समान लेकर पीस लेवें शहद से २-२ माशा की गोली बनालें १-१ गोली प्रातः सायं सेवन करने से ४ दिन में लाभ होता है।

(७) कुलिञ्जन का चूर्ण ६ माशा, कत्था (खैरसार) ३ माशा मुलहटी ३ माशा, इनको खूब पीसकर वस्त्र में छानकर शहद से गोली बनावें। मुख में रखकर चूसें इससे जिह्वा मुख के रोग दूर होते हैं और स्वर शुद्ध होता है।

(८) शुष्क आंवला, चित्रक, अजमोद, हल्दी, यवक्षार, ब्राह्मी वच, हरड़ छाल, सुहागा, धान खील, इसबगोल इन सबको पीस कर मधु मिलाकर गोलियां बनावें इन गोलियों को, लुआब इसबगोल, अथवा शहद से खिलावें स्वरभंग अच्छा होगा।

(९) कण्टकारी घृत, रास्ना, खरैंटी, गोखरू, सौंठ, कालीमिर्च, पीपल इन सब को कूट कर छानलें, और इन सबसे चौगुना गोघृत, गोदुग्ध से चौगुना कण्टकारी छोटी हरी का स्वरस लेकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कढाई कलईदार में पकावें मंदी २ आग पर पकावें जब स पदार्थ जलकर घृत शेष रहे, उतार कर छानलें, यह कण्टका घृत है।

मात्रा—६ माशा से २ तोला पर्यन्त उष्ण गोदूध में मिला-कर पीवें इससे सब प्रकार का कास रोग और स्वर भेद अच्छा हो जाता है।

* आर्य समाज का राजनीतिक दल बना *

२४ दिसम्बर दयानन्द मठ, रोहतक की बैठक का वह ऐतिहासिक दृश्य जिस व्यक्ति ने भी देखा है वह यह कहे बिना नहीं रह सकता कि भारत में सम्भवतः आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जिसमें अब भी ऐसे व्यक्ति हैं जो राज्य-सम्मान तथा पदों के आकर्षण से ऊपर हैं। हरयाणे भर के आर्य समाज के २५०० प्रतिनिधियों का पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा से पूज्य आचार्य भगवान्देव जी को अपने दल का नेता मानकर महर्षि दयानन्द के आदेशों को पूर्ण करने की शपथ ग्रहण करना एक महान् क्रान्तिकारी पग है। पूज्य आचार्य जी ने राजनैतिक दल के नाम तथा विधान निर्माण के लिए उच्च विद्वनों की एक उपसमिति का गठन कर दिया है राजनैतिक दल को व्यापक बनाने के लिए पूज्य आचार्य जी सारे प्रान्त का दौरा कर रहे हैं। प्रत्येक ग्राम तहसील जिला स्तर पर दल की तदर्थ समितियों के गठन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं से प्रार्थना है कि वे इस विषय में अपने सुझाव तथा सेवायें देने और विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए 'संयोजक—वैदिक राज्य सभा दयानन्द मठ (रोहतक) के पते से पत्र व्यवहार करें। इन्द्रदेव मेधार्थी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.